सांध्य दैनिक

4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 207 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 4 सितम्बर, 2026

मूल्य ₹ 3/-

क्रोध वह हवा है जो बुद्धि के दीप को बुझा देती है।
–रोबर्ट ग्रीन इन्गेर्सोल्ल

मिताली को पटखनी दे स्मृति आगे... 7 | उफ्फ...180 देशों की लिस्ट में भारतीय... 3 | भाजपा सरकार ने खेती-किसानी व... 2

संघर्ष, शिकायत दर्ज एफआईआर का इंतजार

4PM की शेरनियों के साथ पुलिस ज्यादती पर दिल्ली में संग्राम

- » संजय शर्मा की दो टूक दोषी पुलिसकर्मियों पर एफआईआर नहीं हुई तो हाईकोर्ट जाएंगे
- » रविवार तक सरकार के जवाब का इंतजार
- » एक लाख से ज्यादा ट्वीट 40 से अधिक देशों से समर्थन संदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में 4PM की महिला पत्रकारों के साथ हुए जुल्म और जाति पूछ कर किये गये अत्याचार की कहानी से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में गुस्से की लहर है और आक्रोश के स्वर उभर रहे हैं। सोशल मीडिया घटना के वीडियो फुटेज से पटा पड़ा और लोगों के समर्थन संदेशों की बाढ़ सी आ गयी है।

मामला ट्रेंड कर रहा है। समाजिक संगठन, राजनीतिक संगठन और आम जनता ने बढ़ चढ़ कर इस मुद्दे पर 4PM का सपोर्ट किया है। 4PM न्यूज नेटवर्क के समूह संपादक संजय शर्मा आज दिल्ली पहुंचे और प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में प्रेस कांफ्रेंस कि जिसमें भारी तादात में पत्रकार पहुंचे। उनकी आवाज में आवाज मिलाते हुए पत्रकारों ने एक स्वर में घटना की निंदा की है और आगे की लड़ाई का एलान किया है। संपादक संजय शर्मा ने दो टूक कहा है कि वह संडे तक दिल्ली पुलिस की इस दिशा में कार्रवाई का इंतजार करेंगे। यदि माकूल कार्रवाई नहीं होती है तो फिर वह हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाएंगे।

सोशल मीडिया पर 4PM की गूंज

4PM की पत्रकार शाहीन और नफीसा के समर्थन में एक लाख से ज्यादा ट्वीट हुए और 40 से ज्यादा देशों से फोन, एसएमएस और व्हाटसएप्प संदेश आए है। यानी शाहीन के साथ ज्यादती का सवाल अब एक संस्थान की चारदीवारी में बंद मामला नहीं रहा। यह प्रेस की स्वतंत्रता, महिला पत्रकारों की सुरक्षा और पुलिस की जवाबदेही का सवाल बन चुका है। संजय शर्मा ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में 4PM के पिछले संघर्षों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि संस्थान को करोड़ों रुपये के विज्ञापनों के प्रलोभन दिए गए लेकिन 4PM ने सच की आवाज से पीछे हटना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने यह भी बताया कि अलग अलग मौकों पर चैनल को बंद करने जैसी परिस्थितियां सामने आयी लेकिन हर बार कानूनी लड़ाई लड़ी गई और संस्थान अपनी आवाज के साथ वापस आया। उनका संदेश साफ है सत्ता बदलेगी परिस्थितियां बदलेंगी दबाव बदलेंगे लेकिन सवाल पूछने का अधिकार नहीं बदलेगा।

> “एक तरफ देश के बाहर भारतीय मुसलमानों के बारे में सकारात्मक बातें कही जाती हैं वहीं दूसरी तरफ देश के भीतर अगर किसी नागरिक को उसकी पहचान के आधार पर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है तो यह गंभीर विरोधाभास है।”

यह लड़ाई अब पीछे हटने वाली नहीं है

दिल्ली की उस रात के बाद अब सवाल सिर्फ इतना नहीं रह गया है कि 4PM की महिला पत्रकार शाहीन और नफीसा के साथ पुलिस थाने में क्या हुआ था। सवाल अब यह है कि सवाल पूछने वाली पत्रकार की आवाज को आखिर दबाएगा कौन? क्योंकि एक महिला पत्रकार थाने से बाहर निकली, कैमरे के सामने आयी ज्यादती के निशान दिखाए और उसके बाद जो हुआ उसने दिल्ली की सियासत और पत्रकारिता दोनों को हिला दिया। रातभर थाने के बाहर गुस्सा दिखाई दिया, पत्रकारों और सामाजिक संगठनों की आवाज बुलंद हुई और देखते ही देखते मामला दिल्ली की चारदीवारी से निकलकर देश और दुनिया तक पहुंच गया। अब 4PM के संपादक संजय शर्मा खुद दिल्ली पहुंच चुके हैं और उन्होंने साफ कर दिया है यह लड़ाई अब पीछे हटने वाली नहीं है। संपादक संजय शर्मा ने कहा कि 4PM कभी किसी सरकार के खिलाफ नहीं है उसका काम सिर्फ सवाल पूछना है। सवाल पूछना ही पत्रकारिता है और अगर सवाल पूछने की कीमत पुलिसिया उत्पीड़न है तो यह सवाल सिर्फ शाहीन और नफीसा का नहीं रहेगा। यह उस हर पत्रकार का सवाल बनेगा जो सत्ता के सामने कैमरा लेकर खड़ा होता है। संजय शर्मा ने साफ कहा है कि यदि दोषी पुलिसकर्मियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज नहीं किया गया तो 4PM दिल्ली हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाएगा। सरकार को रविवार तक का वक्त दिया गया है। यानी अब गेंद सीधे सरकार के पाले में है कि वह क्या कार्रवाई करती है।

शाहीन-नफीसा बहादुर पत्रकार हैं डरने वाली नहीं

शाहीन और नफीसा सिर्फ 4PM की महिला पत्रकार नहीं हैं वह उस पत्रकारिता की प्रतिनिधि हैं जो सड़क पर उतरकर सवाल करती है। कैमरा लेकर सत्ता के दरवाजे तक जाती है और जवाब मांगती है। यही पत्रकारिता लोकतंत्र की असली ताकत है। 4PM ने दिल्ली के साइकिल घोटाले को जिस तरह प्रमुखता से उठाया उसने कई असहज सवाल खड़े किए। अब जब उसी संस्थान की दो महिला पत्रकारों के साथ पुलिस पर ज्यादती के आरोप लगे हैं तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या उनकी पत्रकारिता और इस कार्रवाई के बीच कोई संबंध है? इसका जवाब आरोप से नहीं जांच से मिलेगा। लेकिन एक बात बिल्कुल साफ है कि शाहीन और नफीसा को डराकर सवाल पूछने से नहीं रोका जा सकता। उनकी बहादुरी का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि घटना के बाद भी उन्होंने चुप रहने के बजाय सामने आकर अपनी बात रखी। उन्होंने सवाल उठाए और न्याय की मांग की।

साथ देने वालों का शुक्रिया अब इंसाफ का इंतजार है

संपादक संजय शर्मा ने उन तमाम लोगों का शुक्रिया अदा किया जिन्होंने शाहीन और नफीसा के साथ खड़े होकर इस मामले को आवाज दी। उन्होंने अधिवक्ता हैदर भाई का भी आभार जताया और कहा कि इस पूरे मामले में कानूनी लड़ाई जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि सीसीटीवी फुटेज सामने आया है और अब उन सवालों का जवाब मिलना चाहिए जो घटना के बाद से लगातार उठ रहे हैं। संजय शर्मा ने कहा कि उन्हें संविधान और न्यायपालिका पर पूरा भरोसा है। उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री से भी न्याय सुनिश्चित करने की अपील की और साफ कहा कि अगर पुलिस की तरफ से एफआईआर दर्ज नहीं की गई तो वह दिल्ली हाईकोर्ट जाएंगे रविवार तक सरकार के रुख का इंतजार किया जाएगा उसके बाद अदालत का दरवाजा खटखटाया जाएगा यह लड़ाई किसी व्यक्ति से बदला लेने की लड़ाई नहीं है यह न्याय की मांग है और इसी वजह से सवाल यह भी है कि जब सीसीटीवी मौजूद है तो निष्पक्ष जांच में परेशानी क्या है? यदि आरोप गलत हैं तो जांच उन्हें गलत साबित कर देगी यदि आरोप सही हैं तो दोषियों पर कार्रवाई होनी चाहिए यही कानून का रास्ता है। संजय शर्मा ने इस पूरे घटनाक्रम के व्यापक सामाजिक प्रभाव की तरफ भी इशारा किया। उन्होंने कहा कि एक तरफ देश के बाहर भारतीय मुसलमानों के बारे में सकारात्मक बातें कही जाती हैं वहीं दूसरी तरफ देश के भीतर अगर किसी नागरिक को उसकी पहचान के आधार पर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है तो यह गंभीर विरोधाभास है। उन्होंने आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के विदेश में दिए गए मुस्लिम समुदाय से जुड़े सकारात्मक बयानों का संदर्भ देते हुए सवाल उठाया कि देश के भीतर ऐसा माहौल क्यों दिखाई दे रहा है जिसमें पहचान के आधार पर भेदभाव के आरोप सामने आते हैं।

हमने सुविधाजनक पत्रकारिता का रास्ता नहीं चुना

4PM चैनल पर दिल्ली के साइकिल घोटाले को प्रमुखता से उठाया गया था। 4PM लगातार सच की आवाज उठा रहा है और शायद यही कारण है कि सरकारों के कोपभजन का शिकार बनना पड़ रहा है। 4PM का कहना है कि उसकी लड़ाई किसी सरकार के खिलाफ नहीं है पत्रकार का काम सवाल पूछना है मुख्यमंत्री से भी मंत्री से भी पुलिस से भी विपक्ष से भी और अपने संस्थान से भी। संजय शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में इसी पत्रकारिता की बात की। उन्होंने कहा कि अगर 4PM भी सवाल पूछना छोड़ देता सत्ता के साथ सुविधाजनक रिश्ते बना लेता और सिर्फ वही बोलता जो सत्ता सुनना चाहती है तो शायद आज उसके पास करोड़ों के विज्ञापन होते और सरकार में उसकी पूछ होती। हमने कभी नहीं पूछा कि आप आम चूस कर खाते हैं या फिर काट कर, आप थकते क्यों नहीं यदि हम भी ऐसा करते तो फिर हम 4PM नहीं होते फिर हम सिर्फ एक और संस्थान होते। 4PM ने जिस रास्ते को चुना है उसका मतलब ही है कि सवाल जारी रहेंगे।

भाजपा सरकार ने खेती-किसानी व उद्योग सब चौपट कर दिया: अखिलेश

सपा प्रमुख का भाजपा पर प्रहार, बीजेपी ने किया पश्चिमी उप्र में सांप्रदायिकता व जातिगत विभाजन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने बीजेपी पर फिर प्रहार किया है। सपा प्रमुख ने कहा है कि भाजपा ने राजनीतिक फायदे के लिए संपन्न पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सांप्रदायिकता व जातिगत विभाजन पैदा करके सिस्टेमेटिक तरीके से अर्थव्यवस्था पर चोट कर रही है।

भाजपा सरकार ने खेती-किसानी, उद्योग चौपट कर दिया। हैंडीक्राफ्ट-एक्सपोर्ट बर्बाद कर दिया। सरकारी नौकरी में भर्ती नहीं हो रही है। खेल को प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है। शिक्षा छीनी जा रही हैं। कला के वैकल्पिक व्यवसाय पर 18 राउंड गोली मारी जा रही है। श्रमिक असंतोष को बढ़ने दिया जिससे कि कारखाने खत्म हो जाए। श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में किसानों पर अत्याचार हो रहा है। किसानी की जमीन को छीनने का प्रयास हो रहा है। जीएसटी के भ्रष्टाचार से छोटे व्यापारियों को मारा जा रहा है। खिलाड़ियों का अपमान हो रहा है। श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार शिक्षा व्यवस्था को बर्बाद कर रही है। स्कूल व जौहर यूनिवर्सिटी बंद करने की साजिश हो रही है।

नारी को डराकर घर बैठाने की साजिश हो रही

नारी को डराकर घर बैठाने की साजिश हो रही है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की दस्तकारी-हस्तकारी को जानबूझकर खत्म किया जा रहा है। अमेरिकी डील का सबसे ज्यादा नुकसान पश्चिमी उत्तर प्रदेश को हुआ है। क्योंकि यहाँ के किसान भी मारे गये और टैरिफ बढ़ने से मुरादाबाद, अलीगढ़, सहारनपुर, मेरठ और बाकी जगह के कारखाने और हस्तशिल्प भी। श्रमिकों का इतना बड़ा आंदोलन हुआ। सामाजिक सौहार्द बिगाड़कर कारोबारियों को डराया गया। गौतम बेटी को मारकर पीडीए पर अत्याचार किया। पुलिस से राढी के मुँह पर लात मरवाई और जाटव भाई के साथ जुल्म-ज्यादती की।

अब किसी के बहकावे में नहीं आएंगे लोग

भाजपा और उसके सहयोगियों के लिए 27 के चुनाव में सबसे अप्रत्याशित परिणाम पश्चिमी उत्तर प्रदेश से ही आएगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के वोटों का सौदा कोई नहीं कर पायेगा, क्योंकि 10-15 सालों से लगातार हो रहे उत्पीड़न, उपेक्षा, अत्याचार से अब पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान, मजदूर-श्रमिक, हस्तकार, युवा, महिला, खिलाड़ी, कलाकार, दुकानदार, व्यापारी-कारोबारी, एक्सपोर्टर, उद्योगपति सब जागरूक हो गये हैं, वो अब किसी के बहकावे में नहीं आएंगे।

बनारस मेरा घर वहीं से लड़ूंगा विस चुनाव: अजय राय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय के विधानसभा चुनाव लड़ने की अटकलें लगाई जा रही हैं। इस बीच अजय राय से किस सीट से विधानसभा चुनाव लड़ने को लेकर सवाल किया गया। चुनाव लड़ने के सवाल पर अजय राय ने बताया, अरे बनारस हमारा घर है, हम बनारस कैसे भूल जाएं, बिल्कुल चुनाव लड़ेंगे और डंके की चोट पर चुनाव लड़ेंगे और वही सीट पिंडरा जहां हमारा घर है, जहां से उदल पटेल 9 बार विधायक रहे थे।

» यूपी कांग्रेस अध्यक्ष ने किया ऐलान

पिंडरा के आशीर्वाद से मैंने उन्हें हराया। उसके बाद सोनेलाल को दो बार हराया। इसके बाद निर्दलीय जीतकर बसपा सरकार को हराया और फिर 12 में कांग्रेस से जीता। कांग्रेस अध्यक्ष ने पिंडरा से चुनाव लड़ने का फैसला किया है। इस बीच उन्होंने बताया, इस बार पिंडरा का एकतरफा चुनाव रहेगा। पिंडरा की जनता हमारे साथ खड़ी है। निश्चित तौर पिंडरा हमारा घर है और मैं पिंडरा से चुनाव लड़ूंगा। वहीं बीजेपी के बाद निर्दलीय और फिर आजादी के बाद कांग्रेस का दामन थामने के सवाल पर अजय राय ने कहा, साल 1952 से लेकर 1996 तक जिस सीट से मैं जीता हूं वहां पर न कभी जनसंघ जीती और न कभी बीजेपी जीती। वहां पर जनसंघ और बीजेपी बुरी तरह से हारी है और उनकी जमानत जब्त हुई है। अजय राय ने आगे बताया, 1996 में बीजेपी पहली बार पिंडरा में चुनाव जीती और वहां पर अजय राय चुनाव जीता वह मेरा व्यक्तिगत चुनाव था। मैंने दिन रात 3 साल तक मेहनत करके और लोगों का दिल जीतकर मैं आया। उन्होंने आगे कहा, जब तक अटल बिहारी वाजपेयी की बीजेपी थी, तब तक बीजेपी के पास दम था और कार्यकर्ताओं का विश्वास था, जिस दिन वाजपेयी बिस्तर पर गए और गुजरात की कंपनी आई और उसकी सरकार चलने लगी उस दिन कार्यकर्ताओं का महत्व खत्म हो गया।

अजय राय ने आगे यह भी कहा, अब बीजेपी कॉर्पोरेट की तरह चल रही है। वहां पर अब कार्यकर्ता दरी बिछाने वाला, चादर बिछाने वाला बचा है। बीजेपी में अब कार्यकर्ताओं को पूरी तरह से बाहर खड़ा कराया जाता है और गुजरात के लोगों को वहां महत्व मिलता है। जब कार्यकर्ताओं का महत्व खत्म हो गया तो अजय राय ने भी सोचा कि जब कार्यकर्ता ही नहीं रहेगा तो क्या फायदा।

कांग्रेस नेता ने आगे कहा, आज मेरे साथ कार्यकर्ता खड़े हैं वह इसलिए क्योंकि मैं कार्यकर्ताओं के साथ खड़ा रहता हूं। लड़ता हूं और संघर्ष करता हूं। जब बीजेपी कार्यकर्ताओं को भूल गई तो हम भी बीजेपी को भूल गए और छोड़ दिया। सीएम योगी पर बोलते हुए अजय राय ने कहा कि उन्होंने मुझे आरोपित कर दिया कि मैं बाबा विश्वनाथ का भक्त हूं। काशी से आता हूं, हर-हर महादेव वहां होता है।

गठबंधन पर जो होना हो जल्द हो: इमरान मसूद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच छिड़ी सियासी जंग के बीच सांसद इमरान मसूद का बड़ा बयान आया है। कांग्रेस सांसद ने कहा कि जो भी होना है जल्दी होना चाहिए, बीजेपी को हराना आसान नहीं है। हमें तुरंत मैदान मे निकलना चाहिए ताकि बीजेपी हमसे आगे न निकल जाए। सहारनपुर से कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने यूपी चुनाव को लेकर कहा कि हम चाहते हैं कि उत्तर प्रदेश में भाजपा हारे, हम चाहते हैं कि यूपी में हमारी पार्टी का सर्वाइव करे और ये हमारा मौलिक अधिकार है। तो हम अपनी पार्टी का भी सर्वाइवल चाहते हैं और हम भाजपा को हराना भी चाहते हैं।

उन्होंने कहा कि पूरे देश में राहुल गांधी के नेतृत्व में एक माहौल बन गया है। मेरा जो काम करने का तरीका है वो सिंपल और साफ़ हैं कि लड़ाई ऐसी होनी चाहिए जिसका नतीजा आए, जो भी होना है उसे तुरंत करके हमें मैदान में निकलना चाहिए, बीजेपी हमसे आगे न निकल जाए, बीजेपी को हराना इतना आसान नहीं है। हवा के अंदर बीजेपी नहीं हार रही है। तो हमें सब चीजों को फ़ाइनल करके रोड मैप तैयार करके आगे निकलना चाहिए। यूपी में कांग्रेस और सपा मिलकर चुनाव लड़ सकते हैं। इमरान मसूद के इस बयान को सीट शेयरिंग का फॉर्मूला तय करने की कोशिश से जोड़कर देखा जा रहा है। हालांकि अभी इसे लेकर कोई बातचीत शुरू नहीं हुई है लेकिन कांग्रेस चाहती है, उसे सम्मानजनक सीटें मिलें।

आउटसोर्स नौकरियों में नहीं मिल रहा आरक्षण: लाल बिहारी यादव

» सपा ने उठाए सवाल, सरकार नियमित नौकरियों पर ध्यान दे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के नेता और विधान परिषद के नेता प्रतिपक्ष लाल बिहारी यादव ने प्रदेश में आउटसोर्सिंग के जरिए दी जा रही नौकरियों और आरक्षण को लेकर योगी आदित्यनाथ सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि आउटसोर्सिंग के जरिए नौकरियां देने से आरक्षण का लाभ एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग को नहीं मिल पा रहा है, सरकार को नियमित नौकरियों पर ध्यान देना चाहिए।

लाल बिहारी यादव मुरादाबाद के सर्किट हाउस में समाजवादी पार्टी की शिक्षक एमएलसी चुनाव को लेकर अहम बैठक में पहुंचे थे, इस दौरान उन्होंने पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को चुनाव की रणनीति समझाई और कहा कि ये चुनाव शिक्षकों के सम्मान और उनके हक की लड़ाई है। उन्होंने आपसी मतभेद भुलाकर सपा प्रत्याशी हाजी दानिश अख्तर को जिताने के लिए एकजुट होकर काम करने की अपील की।

सपा नेता ने इस दौरान योगी सरकार की आउटसोर्सिंग व्यवस्था पर भी सवाल उठाए और कहा कि तृतीय और चतुर्थ श्रेणी की कई नौकरियां आउटसोर्सिंग के जरिए दी जा रही हैं। उन्होंने दावा किया कि कुछ कर्मचारियों की नियुक्ति को चार-पांच महीने हो गए लेकिन, उन्हें अब तक वेतन नहीं मिला है। आउटसोर्सिंग के जरिए नौकरियां देने से आरक्षण का लाभ एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग को नहीं मिल पा रहा है। सरकार को नियमित नौकरियों पर ध्यान देना चाहिए, ताकि युवाओं को स्थायी रोजगार मिल सके।

गठबंधन पर फैसला शीर्ष नेतृत्व करेगा

सपा-कांग्रेस गठबंधन में सीटों के बंटवारे के सवाल पर उन्होंने कहा कि कौन कितनी सीटों पर चुनाव लड़ेगा, इसका फैसला दोनों पार्टियों का शीर्ष नेतृत्व करेगा। अखिलेश यादव और राहुल गांधी समेत नेतृत्व जो फैसला करेगा, पार्टी कार्यकर्ता उसका सम्मान करेंगे। वहीं राजभर के बयानों पर उन्होंने कहा कि उन्हें बयानबाजी के बजाय गरिमा बनाए रखना जरूरी है।

सपा प्रमुख व सीजेपी नेता रांका में मुलाकात

समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने लखनऊ में कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के राष्ट्रीय प्रवक्ता आशुतोष रांका के साथ 90 मिनट तक बंद कमरे में मैराथन बैठक की। यह हाई-प्रोफ़ाइल बैठक समाजवादी पार्टी मुख्यालय के समीप स्थित जनेश्वर मिश्र ट्रस्ट के दफ़्तर में हुई। इस मुलाकात के दौरान रांका के साथ पार्टी के सात सहयोगियों का एक प्रतिनिधिमंडल भी मौजूद था। लगभग डेढ़ घंटे तक चली इस लंबी बातचीत के बाद हालांकि दोनों में से किसी भी दल ने कोई आधिकारिक संयुक्त बयान जारी नहीं किया और नेताओं ने बाहर निकलते समय मीडिया से दूरी बनाए रखी फिर भी, राज्य की एक स्थापित क्षेत्रीय दिग्गज पार्टी और युवाओं के नेतृत्व वाले उभरते राजनीतिक आंदोलन के बीच हुई इस अचानक मुलाकात के कूटनीतिक और सियासी मायनों पर राज्यभर में जबरदस्त चर्चा शुरू हो गई है।

आकाश अभी अपरिपक्व, अभी बड़ी जिम्मेदारी नहीं: मायावती

» बसपा प्रमुख ने आकाश आनंद को राष्ट्रीय संयोजक के पद से हटाया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो मायावती ने एकबार फिर भतीजे आकाश आनंद को झटका दिया है। उन्होंने राजनीतिक रूप से और अधिक परिपक्व (मैच्योर) होने की बात कहते हुए पार्टी की किसी भी बड़ी जिम्मेदारी से दूर रखने का फैसला किया है। उन्होंने मान्यवर कांशीराम के सिद्धांतों का हवाला देते हुए स्पष्ट किया कि जिस तरह उन्होंने अपने परिवार को केवल पार्टी के कार्य करने की इजाजत दी थी, चुनाव लड़ाने या पद देने के खिलाफ थे। उसी संकल्प पर चलते हुए आकाश आनंद को भी केवल पार्टी में कार्य करने की अनुमति दी गई है।

मायावती ने कहा कि आकाश आनंद को अभी और परिपक्वता की आवश्यकता है ताकि विरोधी दलों द्वारा साम, दाम, दंड, भेद जैसे हथकंडों के इस्तेमाल से पार्टी को होने वाले संभावित चुनावी नुकसान से बचाया जा सके। इसके साथ ही आकाश आनंद ने भी अपना एक्स प्रोफाइल बदल लिया है।

उन्होंने राष्ट्रीय संयोजक की जगह बसपा कार्यकर्ता के रूप में अपनी पहचान बताई है। इससे आकाश के समर्थकों में निराशा है। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने लखनऊ में पार्टी की ऑल-इंडिया स्तर की एक महत्वपूर्ण बैठक की अध्यक्षता करते हुए संगठन को मजबूत करने और ज्वलंत मुद्दों पर पार्टी का रुख साफ करने संबंधी निर्देश जारी किए।

बैठक के दौरान उन्होंने पिछले कार्यों की समीक्षा की और सभी छोटे-बड़े पदाधिकारियों को कमियों को दूर कर पूरी ईमानदारी व निष्ठा से पार्टी के दिशा-निर्देशों का पालन करने की सख्त हिदायत दी। कांशीराम जी के संघर्षों का जिक्र करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि शोषित वर्ग को शासक वर्ग बनाना ही बहुजन मूवमेंट का मुख्य लक्ष्य है और इसके लिए सत्ता हासिल करना बेहद जरूरी है। इसके अलावा, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के अमेरिका दौरे पर दिए गए बयानों का संज्ञान लेते हुए मायावती ने संघ की कथनी और करनी में भारी अंतर का आरोप लगाया।

157वें पायदान पर खड़ी पत्रकारिता के दरवाजे पर दिल्ली पुलिस की दस्तक!

उफ्फ... 180 देशों की लिस्ट में भारतीय मीडिया का 157वां नंबर

26 ▶ वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में भारत 157वें स्थान पर है।

151 ▶ वें स्थान पर था भारत पिछले साल

“सवाल पूछो तो मुकदमा, रिपोर्ट करो तो दबाव, सत्ता को घेरो तो पुलिस! दुनिया के प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में भारत की फिसलती तस्वीर ने खोल दी लोकतंत्र की पोल”

» सवालों के कटघरे में हिंदुस्तान की प्रेस आजादी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दिल्ली पुलिस की शर्मनाक हरकत

नई दिल्ली। शाहीन के साथ पुलिसिया उत्पीड़न की तस्वीरें आने के बाद न सिर्फ दिल्ली बल्कि देश का माहौल बदलने लगा है और हर कोई इस घटना से दुखी है। उस पुलिस स्टेशन जहां पर शाहीन को पुलिस वैन में बिठा कर लाया गया था वहां रातभर समाजिक संगठन, वकील और मीडिया जगत की दिग्गज हस्तियां पहुंची और दोषी पुलिसकर्मियों पर एफआईआर दर्ज कराने की अपनी मांग रखी।

अब सवाल सिर्फ एक पत्रकार का नहीं रहा शाहीन प्रकरण के बाद सवाल यह है कि सत्ता से सवाल पूछने की कीमत क्या अब देश में लाठी होगी? कयामत ऐसे ही आती है। पहले एक आवाज को दबाने की कोशिश होती है फिर वही आवाज हजारों गलों में उतर जाती है। पहले एक पत्रकार को डराया जाता है फिर पूरा पत्रकार समाज थाने के दरवाजे पर खड़ा हो जाता है। पहले पुलिस कहती है कि सब कुछ नियम के मुताबिक हुआ और फिर सवाल उठता है कि अगर सब कुछ नियम के मुताबिक था तो इतना डर किस बात का है?

दिल्ली में **4PM** की पत्रकार शाहीन खान और उनकी साथी पत्रकार नफीसा खान के साथ पुलिस ज्यादती का मामला अब सिर्फ एक थाने की चारदीवारी में बंद घटना नहीं रह गया है। सरकारी कार्यक्रम के कवरेज करने पहुंची दोनों पत्रकारों के साथ इसलिए उत्पीड़नात्मक कार्रवाई हुई कि वह **4PM** की पत्रकार थी और **4PM** को दिल्ली में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पंसद नहीं करती। दोनों पत्रकारों को पुलिस थाने ले गयी जहां उनके साथ मारपीट की गयी। शाहीन का आरोप है कि उनकी पहचान और खान नाम सामने आने के बाद दुर्व्यवहार और बढ़ा। दूसरी तरफ दिल्ली पुलिस इन आरोपों को सिरे से खारिज कर रही है और दावा कर रही है कि वीवीआईपी रूट बाधित होने तथा पुलिस निर्देशों का पालन न करने के कारण दोनों को पूछताछ के लिए थाने लाया गया। लेकिन अब असली सवाल पुलिस के बयान और पत्रकारों के आरोप के बीच खड़ा है। सच क्या है? और इस सच को सामने लाने के लिए स्वतंत्र जांच क्यों न हो?

शाहीन तुम अकेली नहीं हो

रातभर थाने के बाहर हंगामा हुआ और सामाजिक संगठनों ने प्रर्दशन किया। पत्रकार संगठनों ने भी मामले पर गंभीर चिंता जताई और संबंधित पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई तथा निष्पक्ष जांच की मांग की है। **4PM** की महिला पत्रकार शाहीन के साथ कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग लीगल सेल की टीम साकेत थाने पहुंची में जहां अल्पसंख्यक विभाग के एनओबी महमूद खान अस्पताल से थाने तक पत्रकार शाहीन के साथ रहे। महमूद खान ने बयान जारी करते हुए कहा कि बहन शाहीन के साथ वह और उनकी टीम लगातार बनी हैं मैं भी लगातार उनके संपर्क में हूं उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री से

सवाल पूछने पर शाहीन के साथ बर्बरता करने वाले पुलिसकर्मियों के साथ कानूनी कार्यवाही सुनिश्चित होनी चाहिये। कॉंग्रेस अल्पसंख्यक विभाग स्टेट चेयरमैन वाहिद कुरैशी भी पुलिस स्टेशन पहुंचे और दोषी पुलिसकर्मियों पर एफआईआर दर्ज कराने की मांग की। लीगल सेल इंचार्ज एडवोकेट रईस फारूकी ने तत्काल उन पुलिसकर्मियों पर पहचान कर कानूनी कार्रवाई की मांग रखी जिन्होंने शाहीन के साथ उनकी धार्मिक पहचान के आधार पर उत्पीड़नात्मक कार्रवाई की।

कैमरा झूठ नही बोलता- चोट के निशान साफ दिखाई दे रहे

क्योंकि कैमरे पर चोट के निशान दिखाई देने के बाद कहानी सिर्फ बयानबाजी की नहीं रह जाती। सवाल उठता है–ये निशान कैसे आए? थाने में क्या हुआ? किसने उन्हें हिरासत में लिया? किस अधिकारी के निर्देश पर कार्रवाई हुई? सीसीटीवी में क्या रिकॉर्ड है? पुलिस स्टेशन की एंट्री और डेली डायरी क्या कहती है? मेडिकल रिपोर्ट क्या कहती है? इन सवालों के जवाब आने चाहिए। क्योंकि लोकतंत्र में पुलिस की ताकत का मतलब यह नहीं कि सवाल पूछने वाले को जवाब देने के बजाय थाने का रास्ता दिखा दिया जाए। और यहीं से यह कहानी दिल्ली की सीमा पार करके पूरे देश के सामने खड़ी हो जाती है।

देशों की सूची में भारतीय मीडिया की हालत बदतर

रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स के 26 वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में भारत 157वें स्थान पर है। पिछले साल भारत 151वें स्थान पर था। यानी प्रेस की आजादी के वैश्विक पैमाने पर भारत की स्थिति और नीचे गई है। ऐसे समय में अगर राजधानी दिल्ली में दो महिला पत्रकार आरोप लगाती हैं कि उन्हें रिपोर्टिंग के दौरान पुलिस ने पीटा थाने ले जाया गया और उनकी पहचान पूछे जाने के बाद कथित दुर्व्यवहार बढ़ गया तो इसे सिर्फ एक घटना कहकर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। क्योंकि दिल्ली सिर्फ देश की राजधानी नहीं है। दिल्ली लोकतंत्र का आईना है। और इस आईने में अगर पत्रकार के सवाल के सामने पुलिस की लाठी दिखाई दे रही है तो सवाल बहुत बड़ा है।

क्या ताली बजाना पत्रकारिता है?

पत्रकार का काम क्या है? सत्ता के मंच पर खड़े होकर ताली बजाना? सरकार की प्रेस रिलीज पढ़ना? मुख्यमंत्री आएं तो कैमरा उठाना लेकिन सवाल न पूछना? मंत्री आएं तो तस्वीर लेना लेकिन जवाब मांगने की कोशिश न करना? अगर पत्रकार सवाल नहीं पूछेगा तो फिर लोकतंत्र में सवाल कौन पूछेगा? और अगर पत्रकार सवाल पूछेगा तो क्या उसे पुलिस थाने तक पहुंचा दिया जाएगा? यही वह मोड़ है जहां शाहीन की कहानी **4PM** की कहानी से निकलकर भारतीय पत्रकारिता की कहानी बन जाती है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

नेपाल की त्रासदी से सबक ले भारत

नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ और हिमस्खलन ने एक बार फिर यह कठोर सत्य सामने ला दिया है कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ और पहाड़ों की संवेदनशीलता की अनदेखी मानव सभ्यता के लिए कितनी भारी पड़ सकती है। इसके बाद से भारतीय पर्यावरणविदों ने भी भारत को सर्तक रहने की चेतावनी दी हे। इस त्रासदी का सबसे बड़ा संदेश जलवायु परिवर्तन से जुड़ा है। हिमालय केवल बर्फ से ढकी पर्वतमाला नहीं, बल्कि एशिया की जल-सुरक्षा का आधार है। भोटेकोशी नदी तंत्र में ग्लेशियर के बड़े हिस्से के टूटने, बर्फ-पत्थरों के विशाल मलबे के नीचे आने और नदी के प्रवाह में अस्थायी अवरोध बनने के बाद अचानक बाढ़ का जो रौद्र एवं भयावह रूप सामने आया, उसने नेपाल और चीन के तिब्बती क्षेत्र में भारी तबाही मचाई। वैज्ञानिकों ने भी इस बात पर सावधानी बरती है कि किसी एक घटना को सीधे जलवायु परिवर्तन का परिणाम घोषित करने के बजाय दीर्घकालिक जलवायु और भूगर्भीय बदलावों को साथ देखकर समझना चाहिए। नेपाल में 579 और तिब्बत में 5 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है तथा लगभग 2,482 लोग लापता बताए जा रहे हैं।

हजारों लोगों को बचाया गया है, लेकिन दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों और लगातार बने नए खतरे के कारण राहत एवं बचाव कार्य अभी भी चुनौतीपूर्ण हैं। यह घटना केवल नेपाल की प्राकृतिक त्रासदी नहीं है, बल्कि पूरे हिमालयी क्षेत्र के लिए भविष्य का भयावह संकेत है। प्रारंभिक वैज्ञानिक आकलन बताते हैं कि ग्लेशियर का हिस्सा टूटकर नीचे गिरा, जिससे बर्फ, चट्टान, मिट्टी और मलबे का विशाल प्रवाह पैदा हुआ। इसने नदी के प्रवाह को अवरुद्ध किया और बाद में जमा पानी तथा मलबे के दबाव से अचानक विनाशकारी बाढ़ आई। विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे घटनाक्रम को केवल सामान्य बाढ़ कहना भूल होगी, यह ग्लेशियर, भूस्खलन, मलबा-प्रवाह और नदी-बाढ़ जैसे अनेक खतरों के एक साथ सक्रिय होने वाली 'बहु-आपदा' का उदाहरण है। तापमान बढ़ने के साथ ग्लेशियर तेजी से पीछे हट रहे हैं और अनेक नई ग्लेशियर झीलें बन रही हैं। इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट के अनुसार हिंदूकुश हिमालय क्षेत्र में लगभग 25 हजार ग्लेशियर झीलें हैं और बढ़ता तापमान ग्लेशियर झीलों के फटने यानी (जीएलओएफ) के जोखिम को बढ़ा रहा है। नेपाल में 1920 के दशक से अब तक 90 से अधिक ग्लेशियर झील विस्फोट बाढ़ दर्ज की जा चुकी हैं।

> हिमालय केवल बर्फ से ढकी पर्वतमाला नहीं, बल्कि एशिया की जल-सुरक्षा का आधार है। भोटेकोशी नदी तंत्र में ग्लेशियर के बड़े हिस्से के टूटने, बर्फ-पत्थरों के विशाल मलबे के नीचे आने और नदी के प्रवाह में अस्थायी अवरोध बनने के बाद अचानक बाढ़ का जो रौद्र एवं भयावह रूप सामने आया, उसने नेपाल और चीन के तिब्बती क्षेत्र में भारी तबाही मचाई।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

मौलिक अधिकारों के संरक्षण की दिशा में न्यायिक पहल

डॉ. जगदीप सिंह

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने एक फैसला सुनाया है, जो पूरे देश के युवाओं के लिए राहतकारी है। चीफ जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने अनुच्छेद 142 की असाधारण शक्ति का इस्तेमाल करते हुए जंतर-मंतर और देशभर में हुए छात्र प्रदर्शनों से जुड़ी सभी एफआईआर को रद्द कर दिया। अदालत ने साफ कहा कि सद्भावना से आए युवाओं का भविष्य आपराधिक मामलों की छाया में नहीं रहना चाहिए। यह निर्णय सिर्फ कानूनी राहत नहीं। यह भारतीय लोकतंत्र की आत्मा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और छात्रों के अधिकारों की पुष्टि है। ये प्रदर्शन नीट-यूजी पेपर लीक, परीक्षा व्यवस्था में गड़बड़ी, पारदर्शिता की कमी और शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग को लेकर शुरू हुए थे। दिल्ली पुलिस ने अकेले इस अवधि में 13 एफआईआर दर्ज की थीं। हजारों छात्र देश के विभिन्न हिस्सों से दिल्ली आए और जंतर-मंतर पर जमा हुए।

प्रदर्शन जल्द ही कई राज्यों में फैल गया। केंद्र सरकार के अलावा बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र तथा असम आदि की सरकारों ने अदालत में अर्जी दायर कर इन मामलों को रद्द करने की अनुमति मांगी। अदालत ने न सिर्फ इन अर्जियों को स्वीकार किया, बल्कि पूरे देश पर अपना आदेश लागू कर दिया। किसी भी राज्य या केंद्रशासित प्रदेश में उसी घटना से जुड़ी एफआईआर अगर अभी तक सामने नहीं आई, तो उसे भी बंद माना जाएगा। कोई नई एफआईआर भी दर्ज नहीं की जा सकेगी। ये निर्देश पूरे भारत पर लागू होते हैं। इससे साफ होता है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता किसी एक शहर या घटना तक सीमित नहीं, यह पूरे देश के नागरिकों का अधिकार है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(क) हर नागरिक को वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार देता है। इसमें शांतिपूर्ण सभा और विरोध का अधिकार भी शामिल है। जंतर-मंतर पर छात्र इसलिए इकट्ठा हुए थे, क्योंकि वे परीक्षा व्यवस्था की खामियों और अपने भविष्य की चिंताओं को लेकर आवाज उठाना चाहते थे। प्रदर्शन लोकतंत्र का स्वस्थ लक्षण है।

जब प्रशासन इस आवाज को दबाने के लिए एफआईआर का सहारा लेता है, तो संविधान का मूल उद्देश्य कमजोर पड़ता है। सुप्रीम कोर्ट ने ठीक यही कमजोरी दूर की। अदालत ने कहा कि युवा प्रदर्शनकारी, जो सद्भावना से आए थे, उनके खिलाफ मामले आगे नहीं बढ़ाए जाएंगे। यह फैसला लोकतंत्र को मजबूत बनाता है, क्योंकि लोकतंत्र सिर्फ चुनाव तक सीमित नहीं होता। लोकतंत्र

में नागरिकों को बिना भय के अपनी बात कहने, नीतियों पर सवाल उठाने और शांतिपूर्ण तरीके से विरोध जताने का अधिकार होना चाहिए। अगर उनके खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज कर दिए जाएं, तो युवा पीढ़ी चुप हो जाएगी। निस्संदेह, अनु.-19 की स्वतंत्रता असीमित नहीं है। संविधान स्वयं अनुच्छेद-19(2) में उचित प्रतिबंधों का प्रावधान करता है। हिंसा, तोड़फोड़ या गंभीर अपराध करने वालों को राहत नहीं मिलनी चाहिए। अदालत ने ठीक यही संतुलन बनाया। दिल्ली पुलिस को उन लगभग 2,873 व्यक्तियों के खिलाफ नई एफआईआर दर्ज करने की अनुमति दी गई, जिनके गंभीर आपराधिक रिकॉर्ड हैं। हत्या, बलात्कार, अपहरण जैसे मामलों वाले लोग इस राहत के दायरे से बाहर हैं। यह फैसला दिखाता है कि अदालत स्वतंत्रता और व्यवस्था दोनों की रक्षा कर रही है। शांतिपूर्ण आवाज को जगह दी गई, लेकिन अपराध को बर्दाश्त नहीं किया गया। अदालत ने स्पष्ट किया कि यह आदेश विशिष्ट परिस्थितियों में दिया गया है और मिसाल के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। युवा आबादी देश की सबसे बड़ी ताकत है। परीक्षा प्रणाली, रोजगार और शिक्षा की गुणवत्ता उनके जीवन को तय करती है। जब वे इन मुद्दों पर बोलते हैं, तो उन्हें आपराधिक रंग में रंगना गलत है। एफआईआर का बोझ उनके कैरियर, मानसिक स्वास्थ्य और भविष्य को प्रभावित कर सकता है। कई छात्र नौकरी, उच्च शिक्षा या विदेश जाने की तैयारी में होते हैं। आपराधिक केस उनके सपनों पर पानी फेर सकता है।

अदालत ने केंद्र सरकार के उन आश्वासनों को भी नोट किया, जिसमें मुआवजे और मामलों को आगे न बढ़ाने की बात कही गई थी। नीट पेपर लीक के कारण आत्महत्या करने वाले छात्रों के परिवारों को तीन महीने के अंदर मुआवजा देने का आश्वासन भी रिकॉर्ड किया गया। इससे साफ है कि न्यायपालिका, कार्यपालिका और नागरिक समाज मिलकर लोकतंत्र को मजबूत कर सकते हैं। यह निर्णय भारतीय न्यायपालिका की उस परंपरा को आगे बढ़ाता है, जिसमें मौलिक अधिकारों की रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। लोकतंत्र में विरोध का अधिकार इसलिए जरूरी है कि सत्ता हमेशा सही नहीं होती।

सुविधाओं के शहरों में घटती इंसानी जगह

डॉ. पी.के. बाजपेयी

एक अच्छे व्यवस्थित शहर की परख इस बात से होनी चाहिए कि क्या कोई बच्चा सुरक्षित रूप से स्कूल जा सकता है, क्या कोई बुजुर्ग सड़क पर उतरे बिना बाज़ार पहुंच सकता है, क्या व्हीलचेयर इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति बस स्टॉप तक पहुंच सकता है?

बढ़ता शहरीकरण सुविधाओं के लिहाज से बेहतर तो लगता है, लेकिन इसकी एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है। बुजुर्गों के टहलने, बच्चों के खेलने, दिव्यांगजनों के बाधामुक्त आवागमन और महिलाओं व आम नागरिकों के लिए पैदल चलने, घूमने व बैठने की जगहें उत्तरोत्तर सिकुड़ती जा रही हैं। परिणामस्वरूप, आए दिन बढ़ती दुर्घटनाओं और बीमारियों ने लोगों को अपने घरों तक सीमित रहने पर मजबूर कर दिया है। आज बच्चे खुले मैदानों में खेलने के बजाय मोबाइल गेम्स की तरफ उन्मुख हैं और महिलाएं स्क्रीन पर रील्स देखने में व्यस्त हो गई हैं। मोहल्ले की वे सड़कें, जो कभी बच्चों की किलकारियों, औरतों की बैठकों और बुजुर्गों की सांध्य-आवाजाही से गुलजार रहती थीं, आज मोटर वाहनों की चिल्ल-पों और अंधाधुंध दौड़-भाग से भयाक्रांत हो चुकी हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने 19 जून, 2026 के अपने फैसले में कहा कि 'तय फुटपाथों पर चलने का अधिकार एक बुनियादी अधिकार है', जो संविधान के अनुच्छेद 19(1)(द) के आने-जाने और जीवन की आजादी की संवैधानिक गारंटी से आता है। अत: 'पैदल चलने वालों के लिए ख़ास तौर पर दी गई जगह पर ट्रैफिक के बजाय पैदल यात्रियों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।' कोर्ट ने जहां एक ओर सुरक्षित फुटपाथ देने और उन्हें बनाए रखने की सरकारी अधिकारियों की जिम्मेदारी निर्धारित की, वहीं दूसरी ओर उन्हें चलने योग्य, सुरक्षित व बाधामुक्त बनाने पर भी जोर दिया। यह फैसला शहरी नियोजन की इस बुनियादी सोच को चुनौती देता है कि सड़कें मुख्यत: गाड़ियों के लिए होती हैं। साथ ही पैदल चलने वालों को यातायात में बाधा की तरह देखा जाता है। सड़क परिवहन मंत्रालय के अनुसार, 2024 में 36,526 पैदल चलने वालों की सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु हुई, जो सड़क पर होने वाली कुल मौतों का 20.6 प्रतिशत है। इस तरह, हादसों से मरने वाले हर पांच में से एक व्यक्ति पैदल चलने वाला होता है।

अक्सर हम टूटे हुए फुटपाथ, पार्क की गई कारों, फुटपाथ पर चलती मोटरसाइकिलों, रोजी-रोटी कमाने की जद्दोजहद करने वाले रेहड़ी या खोमचे वालों, बिना ढके नालों और रास्ते के बीच में लगे बिजली के खंभों से दो-चार होते हैं, जिनसे फुटपाथ का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाता है। विदेशों में पैदल पथ, उनके दोनों ओर की हरित पट्टिकाएं, खेलते बच्चे और मजे करते लोग शहर की खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं। यूरोपीय देशों में सड़कों को कारों की स्पीड के बजाय लोगों के हिसाब से डिज़ाइन किया जाता है।

सुरक्षित पैदल चलने और साइकिल चलाने के नेटवर्क, ट्रैफिक-शांत पड़ोस और पैदल चलने वालों के लिए बने टाउन सेंटर ने सक्रिय आवाजाही को शहरी जीवन का एक ज़रूरी हिस्सा बना दिया है। पेरिस का '15-मिनट का शहर' सिद्धांत जरूरी सेवाओं को पैदल या साइकिल की दूरी पर रखने की कोशिश करता है। शहर ने साइकिल चलाने के बुनियादी ढांचे को काफी बढ़ाया है और सैकड़ों पैदल चलने वाली स्कूल सड़कें बनाई हैं। इसका मकसद गाड़ियों पर निर्भरता कम करना, हवा की गुणवत्ता सुधारना और रोजाना की शारीरिक गतिविधियों को शहरी जीवन का हिस्सा बनाना भी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सुरक्षित पैदल चलने, शारीरिक सक्रियता, साफ हवा और सड़क सुरक्षा को स्वस्थ जीवन का आधार माना है। अगर दुनिया की आबादी ज़्यादा शारीरिक रूप से सक्रिय हो, तो हर साल 4 से 5 मिलियन मौतों को रोका जा सकता है। इसलिए, सुरक्षित पैदल चलने की सहूलियत रोगों से बचाव का एक माध्यम बन जाती है। इससे ऊर्जा भी बचती है, खर्चा भी बचता है, प्रदूषण भी नहीं होता और सड़क पर जाम भी नहीं लगता है। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस की पहल पर बैंगलोर में चर्च स्ट्रीट पर एक पायलट प्रोजेक्ट के तहत नवंबर 2020 और अप्रैल 2021 के बीच सप्ताहांत में 750 मीटर के हिस्से को मोटर गाड़ियों के लिए बंद कर दिया गया और इसके नतीजे चौंकाने वाले थे।

पायलट प्रोजेक्ट के दौरान, आसपास के दुकानदारों का व्यवसाय बढ़ने के साथ-साथ हवा की गुणवत्ता में सुधार हुआ ही, पैदल चलने वालों की संख्या में औसतन 92 से 117 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हुई। लोगों ने वाहनों के बजाय पैदल चलना और सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करना शुरू किया। चर्च स्ट्रीट की सफलता यह बताती है कि जब लोगों को सुरक्षित और आकर्षक सार्वजनिक जगह मिलती है, तो वे उसका इस्तेमाल करते हैं। शहर में वेंडिंग जोन और पार्किंग स्थल नियत होने चाहिए, ताकि फुटपाथ पूरी तरह पैदल चलने वालों के लिए बचे रहें। यूटिलिटी पोल, ट्रांसफॉर्मर और दूसरे बुनियादी ढांचे से फुटपाथ पर रुकावट नहीं आनी चाहिए। एक अच्छे व्यवस्थित शहर की परख इस बात से होनी चाहिए कि क्या कोई बच्चा सुरक्षित रूप से स्कूल जा सकता है, क्या कोई बुजुर्ग सड़क पर उतरे बिना बाजार पहुंच सकता है, क्या व्हीलचेयर इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति बस स्टॉप तक पहुंच सकता है?

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाएं।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दिओ बताए।।

जीवन में ईश्वर से बढ़कर है गुरु का स्थान

शिक्षक दिवस का मौका हम सबके लिए बहुत खास होता है। 5 सितंबर का दिन एक ऐसा दिन होता है जब हम अपने गुरुओं (शिक्षकों) के द्वारा किए गए मार्गदर्शन और ज्ञान के बदले हम उन्हें श्रद्धा से याद करते हैं। इस मौके पर लोग अपने शिक्षकों को फोन करते हैं, उनसे मिलने जाते हैं या सोशल मीडिया पर उनकी यादगार तस्वीर साझा करते हैं। यह सब अपने गुरु के प्रति आदर-सम्मान दर्शाना होता है। हम सभी आज जो भी है वह अपने शिक्षकों के प्रयासों और नेक मार्गदर्शन के कारण ही हैं। भारतीय जीवन-दर्शन में गुरुओं को ईश्वर से भी बढ़कर बताया गया है।

इतिहास

शिक्षक दिवस की शुरुआत और इसके इतिहास के बारे में बात करें तो द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को तमिलनाडु में हुआ था। उन्हीं के सम्मान में इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन देश के द्वितीय राष्ट्रपति थे और उन्हें भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद्, महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक के तौर पर याद किया जाता है। पूरे देश को अपनी विद्वता से अभिभूत करने वाले डा. राधाकृष्णन को भारत सरकार ने सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया था। शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए एक सभा का आयोजन करें और उसमें अपने साथी का सहयोग करें।

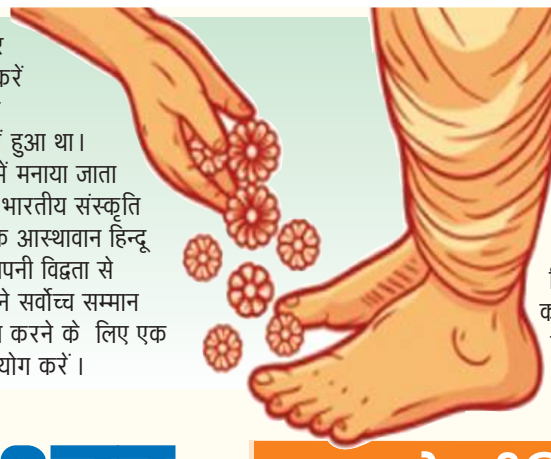

टीचर्स डे का महत्व

5 सितंबर को छात्र अपने प्रिय शिक्षकों के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त करने के लिए प्रदर्शन, नृत्य और विस्तृत शो जैसी विभिन्न गतिविधियां आयोजित करते हैं। यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जो अब स्कूल या कॉलेज में नहीं हैं, शिक्षक दिवस अपने गुरुओं के प्रति आभार व्यक्त करने और शिक्षकों के उनके जीवन पर पड़े गहरे प्रभाव को स्वीकार करने का एक उत्कृष्ट अवसर है। शिक्षक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की नींव हैं और अक्सर अपने छात्रों की सफलता पर गर्व करते हैं।

दें ग्रीटिंग कार्ड और बुके

अगर आपको सही में ये समझ नहीं आ रहा है कि टीचर्स डे के मौके पर आप अपने शिक्षक को कौन सा तोहफा दे सकते हैं तो ग्रीटिंग कार्ड और बुके आपके लिए सबसे अच्छा विकल्प है। कई ऐसे ऑनलाइन वेबसाइट मौजूद हैं जो विशेष दिन पर गिफ्ट्स होम डिलिवरी करते हैं। ऐसे में आप अपने पसंदीदा टीचर को ग्रीटिंग कार्ड और फूलों का गुलदस्ता भेज सकते हैं। आप चाहें तो इस ग्रीटिंग कार्ड पर खास मैसेज भी लिखवा सकते हैं। टीचर्स डे के मौके पर कई तरह के डिजाइनर पेपर वेट भी शिक्षकों को गिफ्ट में दिए जा सकते हैं। कॉफी मग भी आकषर्क गिफ्ट्स में से एक है। आजकल मार्केट में कस्टामाइज कॉफी मग भी मौजूद हैं। आप कॉफी मग पर अपने टीचर की तस्वीर, उनका नाम या फिर प्यारा सा मेसेज डिजाइन करवा कर भी उसे गिफ्ट में दे सकते हैं। इसके अलावा शिक्षक को पेन भी गिफ्ट कर सकते है।

सर्वपल्ली राधा कृष्णन ने कहा कि पूरी दुनिया एक विद्यालय है जहां से कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। जीवन में शिक्षक हमें केवल पढ़ाते नहीं, वे अच्छे-बुरे के बीच फर्क करना सिखाते हैं। कहा जाता है कि राधाकृष्णनन छात्रों की पढ़ाई से ज्यादा उनके बौद्धिक विकास पर ध्यान देते थे। भगवान हम सबके भीतर रहता है, महसूस करता है और कष्ट सहता है और समय के साथ उसके गुण, ज्ञान, सौन्दर्य और प्रेम हममें से हर एक के अन्दर उजागर होंगे। पुस्तकें वह साधन हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं।

हंसना मना है

पति: काश! मैं गणपति होता, तुम रोज मेरी पूजा करती, मुझे लड्डू खिलाती, बड़ा मजा आता। पत्नी: हां, काश तुम गणपति होते, मैं रोज लड्डू खिलाती, और हर साल विसर्जन करके नए गणपति घर लाती, बड़ा मजा आता!

लड़का और लड़की एक रेस्टोरेंट गए, वेटर: मैम, आप कुछ लेंगी? लड़की: भैया एक सब्जी वाली रोटी लाना। वेटर: क्या? लड़का: गांव से आयी है, पिज्जा वाली रोटी मांग रही है।

हम तो ऐसे ही उदासी में बैठे-बैठे पानी में पत्थर मार रहे थे, अचानक से एक मेंढक निकला और बोला, पानी में तो आ, तेरी उदासी उतारूं। तेरी वाली के चक्कर में तूने मेरी वाली का सर फोड़ दिया।

संता: डॉक्टर साहब, प्लास्टिक सर्जरी में कितना खर्चा आएगा? डॉक्टर: 50 हजार संता: अगर प्लास्टिक मैं लेकर दूं तो? डॉक्टर: साले, पिघला कर चिपका भी लेना।

प्रेमिका- तुमको पता है कल मेरा बर्थडे है मुझे क्या गिफ्ट दोगे, प्रेमी - जो तुम चाहो मेरी जान, प्रेमिका- मुझे रिंग चाहिए, प्रेमी- ठीक है रिंग दूंगा पर उठाना मत, मेरा बैलेंस कम है...

कहानी — चतुर मुर्गा

एक घने जंगल में एक पेड़ पर मुर्गा रहा करता था। वह रोज सुबह सूरज निकलने से पहले उठ जाता था। उठने के बाद वह जंगल में दाना-पानी चुगने के लिए चला जाता था और शाम होने से पहले वापस लौट आता था। उसी जंगल में एक चालाक लोमड़ी भी रहती थी। वह रोज मुर्गे को देखती और सोचती, कितना बड़ा और बढ़िया मुर्गा है। अगर यह मेरे हाथ लग जाए, तो कितना स्वादिष्ट भोजन बन सकता है, लेकिन मुर्गा कभी भी उस लोमड़ी के हाथ नहीं आता था। एक दिन मुर्गे को पकड़ने के लिए लोमड़ी ने एक तरकीब निकाली। वह उस पेड़ के पास गई, जहां मुर्गा रहता था और कहने लगी, अरे ओ मुर्गे भाई! क्या तुम्हें खुशखबरी मिली? जंगल के राजा और हमारे बड़ों ने मिलकर सारे लड़ाई-झगड़े खत्म करने का फैसला किया है। आज से कोई जानवर किसी दूसरे जानवर को नुकसान नहीं पहुंचाएगा। इसी बात पर आओ, नीचे आओ। हम गले लगकर एक दूसरे को बधाई दें। लोमड़ी की यह बात सुनकर मुर्गे ने मुस्कुराते हुए उसकी तरफ देखा और कहा, अरे वाह लोमड़ी बहन, ये तो बहुत अच्छी खबर है। पीछे देखो, शायद इसलिए हमसे मिलने हमारे कुछ और दोस्त भी आ रहे हैं। लोमड़ी ने हैरान हो कर पूछा, दोस्त? कौन दोस्त? मुर्गे ने कहा, अरे वो शिकारी कुत्ते, वो भी अब हमारे दोस्त हैं न? कुत्तों का नाम सुनते ही, लोमड़ी ने न आव देखा न ताव और उनके आने की उल्टी दिशा में दौड़ पड़ी। मुर्गे ने हंसते हुए लोमड़ी से कहा, अरे-अरे लोमड़ी बहन, कहां भाग रही हो? अब तो हम सब दोस्त हैं न? हां-हां दोस्त तो हैं, लेकिन शायद शिकारी कुत्तों को अभी तक यह खबर नहीं मिली है, यह कहते हुए लोमड़ी वहां से भाग निकली और मुर्गे की सूझबूझ की वजह से उसकी जान बच गई।

कहानी से सीख: बच्चों, चतुर मुर्गा और चालक लोमड़ी की कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि किसी भी बात पर आसानी से विश्वास नहीं करना चाहिए और चालाक लोगों से हमेशा सावधान रहना चाहिए।

7 अंतर खोजें

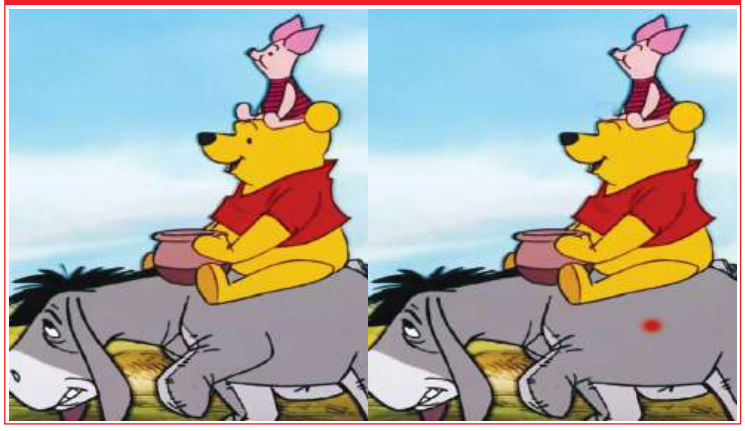

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष आज भागदौड़ और जिम्मेदारियों के बीच तनाव थोड़ा थका सकता है, लेकिन धैर्य ही आपको संभाले रखेगा। दूसरों पर जरूरत से ज्यादा भरोसा करने से नुकसान हो सकता है।

वृषभ आज का दिन खुशियों, मौज-मस्ती और नई शुरुआत की खूबसूरत वजहें लेकर आएगा। आपकी रचनात्मक सोच लोगों का ध्यान खींचेगी और नए लोगों से दोस्ती भी हो सकती है।

मिथुन आज आपकी वाणी ही आपकी ताकत भी बनेगी और परीक्षा भी ले सकती है। किसी सामाजिक कार्यक्रम में कही गई बात का गलत अर्थ निकाला जा सकता है।

कर्क परिवार के लोग आपकी उम्मीदों पर खरे उतरेंगे और दूर रहने वाले किसी रिश्तेदार से शुभ समाचार मिल सकता है। मेहनत का फल मिलने से आत्मविश्वास बढ़ेगा।

सिंह आज किस्मत आपका साथ देती नजर आ सकती है और मनचाहा लाभ मिलने की उम्मीद है। फिर भी सेहत को लेकर लापरवाही न करें। पूजा-पाठ से मन को शांति मिलेगी।

कन्या आज मन में चल रही उलझनों को मां के साथ साझा करने से आपको भावनात्मक राहत मिल सकती है। वाहन चलाते समय विशेष सावधानी बरतें और जल्दबाजी से बचें।

तुला आज घर-परिवार में खुशी और शुभ कार्यों का माहौल बना रहेगा। आपकी मेहनत आखिरकार रंग लाएगी और रुका हुआ धन वापस मिलने से मन को राहत मिलेगी।

वृश्चिक आज आपके दिमाग में कुछ ऐसे नए विचार आ सकते हैं जो कारोबार के लिए काफी फायदेमंद साबित हों। विदेश से जुड़े व्यापार में अच्छी खबर मिलने की संभावना है।

धनु आज का दिन थोड़ा मिला-जुला रहेगा। जीवनसाथी किसी बात से नाराज हो सकते हैं, इसलिए बहस के बजाय प्यार और समझदारी से बात करना बेहतर होगा।

मकर आज सकारात्मक बदलाव आपकी जिंदगी में नई ऊर्जा भर सकते हैं। संतान की ओर से कोई खुशखबरी मिल सकती है, जिससे परिवार में खुशी बढ़ेगी।

कुम्भ आज का दिन थोड़ा उतार-चढ़ाव वाला रह सकता है, इसलिए हर स्थिति में संतुलन बनाए रखें। यात्रा या घूमने के दौरान कोई ऐसी महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती है।

मीन आज कारोबार में चुनौतियां आएंगी, लेकिन धैर्य और सही रणनीति से रास्ता निकलेगा। किसी की सलाह को बिना सोचे-समझे मानने के बजाय अपनी समझ से फैसला लें।

कुणाल खेमू की अगली फिल्म में नजर आयेंगी सास शर्मिला टैगोर

कुणाल खेमू अपनी अगली फिल्म 'वाइब' लेकर आ रहे हैं। इस फिल्म की खास बात है कि इसमें उनकी सास और दिग्गज एक्ट्रेस शर्मिला टैगोर भी नजर आएंगी। ये पहला मौका है जब शर्मिला अपने दामाद के साथ काम कर रही हैं। शर्मिला फिल्म में एक छोटे से रोल में दिखाई देंगी। कुणाल के लिए ये फिल्म इसलिए भी खास है क्योंकि वो इसमें सिर्फ एक्टिंग नहीं कर रहे, बल्कि खुद ही डायरेक्टर की जिम्मेदारी भी संभाल रहे हैं। इससे पहले वो फिल्म मडगांव एक्सप्रेस में डायरेक्टर रह चुके हैं। यानी बतौर डायरेक्टर वाइब उनकी दूसरी फिल्म है।

कुणाल ने मूवी के ट्रेलर लॉच इवेंट में बताया कि ये पहले से तय नहीं था कि शर्मिला ये रोल करेंगी। उन्होंने पहले शर्मिला से पूछा था कि क्या वो फिल्म में छोटा सा रोल (केमियो) करेंगी। इसके बाद शर्मिला ने पहले फिल्म की कहानी का सार यानी सिनॉप्सिस मांगा। लेकिन कुणाल का मानना है कि शर्मिला समझ गई थीं कि उन्हें ये रोल करना ही है। आखिरकार उन्होंने फिल्म के लिए हां कह दी। कुणाल का कहना है कि उनके लिए शर्मिला टैगोर के साथ डायरेक्टर के तौर पर काम करना भी अचीवमेंट है। उन्होंने कहा कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि उन्हें एक दिन शर्मिला जैसी दिग्गज एक्ट्रेस को एक्शन और कट बोलने का मौका मिलेगा। इसलिए ये पल उनके लिए काफी खास है।

फिल्म के ट्रेलर लॉन्च पर कुणाल की पत्नी और एक्ट्रेस सोहा अली खान भी पहुंचीं। वहां उन्होंने कुणाल के मजाकिया अंदाज की तारीफ की। सोहा ने मजाक में कहा कि शादी हो या अंतिम संस्कार, कुणाल किसी भी मौके पर लोगों को हंसा देते हैं। उनके मुताबिक, दोनों परिवारों में कुणाल सबसे ज्यादा मजाकिया हैं।

फिल्म में प्रीति जिंटा भी एक अहम रोल में हैं। हालांकि, उनका किरदार काफी सीरियस है। प्रीति ने मजाक में कुणाल से शिकायत भी कर दी। उन्होंने कहा कि कॉमेडी फिल्म होने के बावजूद कुणाल ने उन्हें ज्यादा मजेदार सीन नहीं दिए। प्रीति ने बताया कि फिल्म की शूटिंग भी काफी मुश्किल रही। कई बार उन्हें लगातार 16 से 18 घंटे तक शूटिंग करनी पड़ी। वाइब में कुणाल खेमू, प्रीति जिंटा और स्पर्श श्रीवास्तव के अलावा वंशिका धीर, यशपाल शर्मा और भोजपुरी स्टार दिनेश लाल यादव भी नजर आएंगे।

फिल्म 'बाप' में डांस नंबर से धमाका करेंगे सनी-मिथुन-संजय-जैकी

सनी देओल को हाल ही में फिल्म बंटवारा 1947 में देखा गया। इस फिल्म को रिव्यूज़ तो पॉजिटिव मिले। हालांकि, बॉक्स ऑफिस पर फिल्म को अच्छा रिस्पॉन्स नहीं मिल पाया। खैर सनी देओल अब एक नई फिल्म से धमाका मचाने आ रहे हैं। वो फिल्म बाप में दिखेंगे। इस फिल्म में सनी देओल के अलावा, मिथुन चक्रवर्ती, संजय दत्त और जैक श्रॉफ जैसे स्टार्स नजर आएंगे।

अब खबरें हैं कि चारों एक्टर्स फिल्म के लिए एक गाने में भी दिखेंगे। इसमें उनका ट्रेडमार्क एक्शन और डांस देखने को मिलेगा। फिल्म को विवेक चौहान डायरेक्ट कर रहे हैं और अहमद खान प्रोड्यूस कर रहे हैं। विवेक ने हाल ही में एक म्यूजिक वीडियो शूट किया है। गाने जून में शूट हुआ। गाना मड आईलैंड में शूट हुआ। इश प्रमोशनल वीडियो में चारों स्टार्स धमाका करते नजर आएंगे। इसके अलावा कई एक्शन मोमेंट भी दिखेंगे।

इस फिल्म का मैन अट्रैक्शन एक्शन ही है। एक्शन सीक्वेंस को एक्शन डायरेक्टर परवेज शेख और रवि वर्मा कोरियोग्राफ कर रहे हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, इसमें अलग-अलग एक्शन सीन भी दिखाए जाएंगे। एक सीन में सनी और संजय बोइंग प्लेन की छत पर लड़ते दिखेंगे। फिल्म में ऐसे सीन शामिल हों। इस अप्रोच से सॉन्ग को ज्यादा सिनमैटिक प्रजेंटेशन मिले और ये पारंपरिक डांस प्रमोशनल वीडियो न लगे। अहमद खान ने कहा कि चारों एक्शन आइकन को साथ में डांस करते हुए देखना यादगार मोमेंट होगा। उन्होंने शूट के बारे में बताते हुए कहा, सच्चे एक्शन हीरोज को डांस और डायलॉगबाजी करते हुए देखना बड़ा मजेदार होने वाला है। डायरेक्टर विवेक चौहान ने कहा कि चारों को एक साथ एक फ्रेम में देखना सिनमैटिक फीस्ट से कम नहीं है।

बॉलीवुड | मन की बात

कर्ज चुकाने के लिए मैंने बुरी फिल्में भी कीं : मनोज वाजपेयी

घर महज चारदीवारी नहीं होता, उसमें अपनों के साथ बिताए लम्हों और अनगिनत यादों की एक पूरी दुनिया बसती है। इसी भाव को केंद्र में रखती है फिल्म द लास्ट मैन इन टावर जो अरविंद अडिगा के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित है। फिल्म में सेवानिवृत्त शिक्षक मास्टरजी अपने घर को रीडेवलपमेंट के लिए देने को तैयार नहीं हैं। मास्टरजी के किरदार में मनोज बाजपेयी नजर आएंगे, जबकि उनकी पड़ोसी की भूमिका दिव्या दत्ता ने निभाई है। दोनों ने अपनी फिल्म, शिक्षक दिवस के मौके पर पर खास बातचीत की।

मनोज ने कहा, कोई भी आदमी जब घर खरीदता है तो अपने बैंक अकाउंट में जितने भी पैसे होते हैं उससे ज्यादा ही औकात में खरीदता है। हमने भी घर खरीदा हम भी कर्जे में डूबे हम भी कैसे-कैसे करके उससे बाहर निकले कुछ बहुत बुरी फिल्में की कर्जे चुकाने के लिए, लेकिन उसका अफसोस इसलिए नहीं है कि फिल्में चाहे जितने भी बुरी हों जानते हुए की थी कि इससे जो मुद्रा आएगी उससे घर आ रहा है। (हंसते हैं) जीवन की यात्रा ऐसी रही है कि इसमें हर तरह के लोग आपसे मिलते रहे हैं। हजारों रेफरेंसेज हैं, हजारों ऐसे अनुभव हैं लोगों के साथ में या उनको दूर से देखा या नजदीक से या उनको जाना है बहुत करीब से वो ऐसे बहुत सारे लोग मिलकर के फिर एक किरदार बनते हैं। जानबूझ कर मैं किसी को लाने की कोशिश नहीं करता हूं। अगर कोई कैरेक्टर मुझे दिखना शुरू हो जाता है तो उसमें फिर कुछ एक चीजें आप डालते हो, लेकिन सारी तैयारी करने के बाद मैं शूटिंग से छह-सात दिन पहले वो छोड़ देता हूं। उसके बाद सीधा फिर सेट पर जाता हूं ताकि कुछ नया किया जा सके। नया तो तभी कर सकता हूं अगर मेरा फाउंडेशन सही हो। एक प्रश्नमै बैकबेंचर था। मैं बीच में बैठता था सबसे पीछे बदमाश बैठते थे। (दिव्या ठहाका मारती हैं) मैं न पूरी तरह बदमाश था ना पूरे तरीके से अच्छा था।

पानी के ऊपर बसा है पूरा गांव, कहलाता है धरती का स्वर्ग, नजारे देख झूम उठेगा मन

गांव का नाम सुनते ही हम सबके मन में हरियाली, खेत-खलिहान, मवेशी-ट्रैक्टर याद आने लगते हैं। पिछले कुछ वर्षों में गांवों की तस्वीर बदली है। भारत में कुछ गांव तो ऐसे भी हैं जो किसी इतने खूबसूरत हैं कि स्वर्ग जैसे दिखते हैं। देश में एक गांव ऐसा भी है जो पूरा का पूरा पानी के ऊपर बसा हुआ है। मानसून के सीजन में इस गांव का नजारा स्वर्ग जैसा होता है। दुनिया के सबसे खूबसूरत गांवों में इसकी गिनती है। दुनियाभर से लोग इस गांव की एक झलक पाने के लिए आते हैं। सबसे दिलचस्प बात यह है कि पानी के ऊपर बसे इस गांव में पक्की सड़कें हैं, यहां पर बसें भी चलती हैं। गांव की प्राकृतिक खूबसूरती सबका मन मोह लेती है। शहर की भागदौड़ भरी जिंदगी से जब मन ऊब जात है तो लोग प्रकृति के गोद में बसे गांव घूमने जाते हैं। गांवों का प्राकृतिक-स्वच्छ वातावरण मन को आत्मिक शांति देता है। भारत में कई खूबसूरत गांव हैं। कुछ पहाड़ों की गोद में तो कुछ नदी-झील किनारे बसे हैं। कुछ मैदानी इलाकों में तो कुछ रेगिस्तानी इलाकों में। एक गांव ऐसा भी है जो पानी के ऊपर बसा हुआ है। गांव में पक्की सड़कें हैं, आधुनिक सुविधाएं हैं। इस गांव का नाम है कडमकुडी केरल का छोटा सा गांव कडमकुडी पानी के ऊपर बसा हुआ है। इसे देखकर लगता है कि जैसे यह किसी और दुनिया का गांव हो। गांव की खूबसूरती मंत्रमुग्ध कर देती है। मानसून में यहां का नजारा किसी स्वर्ग से कम नहीं होता, यही वजह है कि इस गांव को लोग प्यार से छोटा स्वर्ग भी कहते हैं। यह गांव कोच्चि से सिर्फ 15 किलोमीटर की दूरी पर है। एर्नाकुलम जिले में आता है। यह गांव कोच्चि के पास स्थित 14 छोटे-छोटे द्वीपों का एक सुंदर समूह है। कडमकुडी (कडमाकुडी) को धरती का सबसे खूबसूरत गांव कहे जाने की कई वजहे हैं। गांव का नजारा पेंटिंग जैसे लगता है। चारों तरफ शांत बैकवॉटर, धीरे-धीरे चलती छोटी नावें, हर तरफ घनी हरियाली, नारियल के पेड़, खुला आसमान और ताजा हवा के झोकें आपको ऐसी दुनिया का अहसास कराते हैं जिसकी कल्पना मन-मस्तिष्क में चलती रहती है। गांव की साफ-सफाई और शांति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहां प्रकृति की असली आवाजें सुनाई देती हैं। अगर आप एर्नाकुलम जंक्शन से कडमकुडी (कडमाकुडी) गांव जाना चाहते हैं तो सबसे पहले स्टेशन से बाहर निकलकर बस स्टैंड जाएं। वहां से कोथ?ा या वारापुजा या चेरूलूर रूट की बस पकड़ लें। कोथड़ा से कदामक्कुडी गांव के लिए ऑटो मिलते हैं जो 5-10 मिनट में पहुंचा देंगे।

अजब-गजब | ये है दुनिया की सबसे बड़ी झील

इस झील में छिपे हैं तेल-नैचुरल गैस के भंडार

धरती पर नदियों और समुद्रों के अलावा लाखों झीलें भी मौजूद हैं। कुछ झीलें इतनी छोटी हैं कि उन्हें आसानी से नजरअंदाज किया जा सकता है, तो कुछ का आकार इतना बड़ा है कि उन्हें देखकर समुद्र होने का भ्रम होता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दुनिया की सबसे बड़ी झील का नाम कैस्पियन सागर है? नाम में भले ही 'सागर' जुड़ा हो, लेकिन इसे दुनिया की सबसे बड़ी झील माना जाता है। इसकी विशालता, खारा पानी और इसके आसपास बसे देशों की वजह से यह झील बाकी झीलों से बिल्कुल अलग है।

कैस्पियन सागर दुनिया की सबसे बड़ी झील है और यह 3 लाख वर्ग किलोमीटर से ज्यादा क्षेत्र में फैली हुई है। इसका आकार इतना बड़ा है कि कई देशों के क्षेत्रफल से इसकी तुलना की जा सकती है। यह यूरोप और एशिया के बीच स्थित है और इसका फैलाव देखकर पहली नजर में इसे समुद्र समझना बिल्कुल स्वाभाविक है। इसकी सीमा पांच देशों से लगती है। इनमें रूस, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ईरान और अजरबैजान शामिल हैं। यानी कैस्पियन सागर सिर्फ एक बड़ी झील ही नहीं, बल्कि कई देशों के लिए भौगोलिक और आर्थिक रूप से भी काफी महत्वपूर्ण है।

कैस्पियन सागर को लेकर सबसे दिलचस्प बात यही है कि इसके नाम में सागर है, लेकिन इसे झील माना जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि यह किसी महासागर से सीधे जुड़ा हुआ नहीं है। यह एक बंद जल निकाय है, यानी इसका पानी सीधे किसी महासागर में नहीं जाता। हालांकि, यह कोई सामान्य झील नहीं है।

इसका आकार बहुत बड़ा है और इसका पानी भी मीठा नहीं, बल्कि खारा है। यही वजह है कि इसका नाम और इसकी पहचान लोगों को हमेशा भ्रमित करती है। कैस्पियन सागर में कई नदियां आकर मिलती हैं, लेकिन इसमें सबसे ज्यादा पानी वोल्गा नदी से आता है। माना जाता है कि कैस्पियन सागर में आने वाले पानी का करीब 80 प्रतिशत हिस्सा वोल्गा नदी से आता है। इतनी बड़ी नदी से पानी आने के बावजूद कैस्पियन सागर का पानी खारा है। इसकी वजह इसका बंद जल निकाय होना और पानी का बाहर निकलने का प्राकृतिक रास्ता नहीं होना है। पानी के वाष्पीकरण के कारण इसमें मौजूद नमक और दूसरे खनिज पीछे रह जाते हैं।

कैस्पियन सागर सिर्फ क्षेत्रफल के मामले में ही विशाल नहीं है, बल्कि इसकी गहराई भी काफी ज्यादा है। इसका दक्षिणी हिस्सा 1,000 मीटर से भी ज्यादा गहरा बताया जाता है। कैस्पियन सागर के अलग-अलग हिस्सों में गहराई काफी अलग है। इसका उत्तरी हिस्सा अपेक्षाकृत उथला है, जबकि दक्षिणी हिस्से में पानी काफी गहरा है। यही भौगोलिक विविधता इसे और भी खास बना देती है। कैस्पियन सागर में कई ऐसी जीव-जंतुओं की प्रजातियां पाई जाती हैं, जो दुनिया के दूसरे हिस्सों में नहीं मिलतीं। इनमें सबसे खास कैस्पियन सील है। कैस्पियन सील को दुनिया की एकमात्र सील प्रजाति माना जाता है जो पूरी तरह एक अंदरूनी जल क्षेत्र में रहती है। यह प्रजाति कैस्पियन सागर के पर्यावरण के लिए बेहद खास है। इसके अलावा यहां कई तरह की मछलियां और दूसरे जीव भी पाए जाते हैं। कैस्पियन सागर के उत्तरी हिस्से में वोल्गा नदी का डेल्टा भी काफी खास है। यह इलाका कई तरह के प्रवासी पक्षियों और मछलियों के लिए महत्वपूर्ण जगह है। डेल्टा के आसपास की जमीन में नमी काफी ज्यादा रहती है। इस वजह से यहां कई जीवों के लिए रहने और प्रजनन के लिए अनुकूल माहौल बनता है। हर साल कई प्रवासी पक्षी भी इस क्षेत्र में पहुंचते हैं। हालांकि, पर्यावरण विशेषज्ञ इस पूरे क्षेत्र को लेकर चिंतित भी हैं। जलवायु परिवर्तन का असर यहां के पानी, जीव-जंतुओं और आसपास के प्राकृतिक वातावरण पर पड़ सकता है। कैस्पियन सागर सिर्फ प्राकृतिक सुंदरता और जीव-जंतुओं के कारण ही खास नहीं है। इसके नीचे तेल और प्राकृतिक गैस के बड़े भंडार भी मौजूद हैं। इसी वजह से कैस्पियन सागर आर्थिक और रणनीतिक रूप से भी काफी महत्वपूर्ण है। इसके आसपास मौजूद देश लंबे समय से यहां मौजूद प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल करते रहे हैं।

देवबंद के हाशिमपुरा में होगा भाजपा का सूपड़ा साफ

बहुजन समाज की हुंकार - पहले भाजपा के साथ थे अब साथ छोड़ दिया

» गुंडाराज-भ्रष्टाचार चरम पर, रोज नाबालिग बच्चियों से दुष्कर्म, वोट सिर्फ मायावती को

» चंद्रशेखर भाजपा का आदमी है और आकाश आनंद हमारा नेता नहीं

क्षितिजकांत

एक्सक्लूसिव ग्राउंड रिपोर्ट

हाशिमपुरा देवबंद विधानसभा सहारनपुर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सहारनपुर। 2027 से पहले देवबंद विधानसभा के हाशिमपुरा गांव ने भाजपा का सियासी गणित बिगाड़ दिया है। गांव के बहुजन समाज के पांच बड़े चेहरों विनोद कुमार, श्याम कुमार, सोमदत्त, महिपाल और रजत ने खुलकर ऐलान कर दिया है कि इस बार लड़ाई आर-पार की है।

हाशिमपुरा गांव ने साफ कर दिया वोट सिर्फ हाथी को, नेता सिर्फ मायावती, भाजपा से पूर्ण मोहभंग, चंद्रशेखर और आकाश आनंद को नेता मानने से इनकार, और सबसे बड़ी शर्त भाजपा से कोई समझौता मंजूर नहीं।

प्राचीन एवं पौराणिक इतिहास

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले का एक ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व का नगर है, जो महाभारत काल से जुड़ा हुआ है और विश्व प्रसिद्ध इस्लामिक शिक्षण केंद्र दारुल उलूम देवबंद के लिए जाना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार देवबंद का प्राचीन नाम देववृंद था, जिसे महाभारत कालीन माना जाता है।

धार्मिक महत्व

ऐसा माना जाता है कि यहाँ पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान कुछ समय बिताया था और यहाँ देवी दुर्गा का प्राचीन मंदिर (त्रिपुरमालिनी देवी मंदिर) भी स्थित है।

देवबंद विस पर एक नजर

देवबंद अपनी ऐतिहासिक और धार्मिक पहचान के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है, यहाँ प्रसिद्ध इस्लामिक शिक्षण संस्थान दारुल उलूम देवबंद स्थित है। राजनीतिक रूप से यह सीट काफी संवेदनशील और चर्चा में रहती है। देवबंद विधानसभा क्षेत्र भारत के उत्तर प्रदेश विधानसभा के 403 निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है । यह सहारनपुर जिले का हिस्सा है और सहारनपुर लोकसभा क्षेत्र के पांच विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। 2008 से, यह विधानसभा क्षेत्र 403 निर्वाचन क्षेत्रों में 5वें नंबर पर है। 2008 से पहले, जब संसदीय और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन आदेश, 8 लागू हुआ, तब यह निर्वाचन क्षेत्र 400वें नंबर पर था। 16 मार्च 17 को, नव निर्वाचित विधायक बृजेश सिंह ने घोषणा की कि उनका इरादा निर्वाचन क्षेत्र का नाम बदलकर देव-वरंद रखने का है।

विनोद कुमार ने कहा - भाजपा को छोड़ दिया, नेता सिर्फ बहन जी

हम बहुजन समाज से हैं, हम प्रत्याशी देखकर वोट करेंगे। हमारा इस सरकार में कोई लाभ नहीं हुआ। हमारे नेता सिर्फ बहनजी हैं। मायावती हमारे समाज की नेता हैं। चंद्रशेखर का क्रेज है लेकिन युवाओं में, लेकिन हम चंद्रशेखर को अपना नेता नहीं मानते। अगर इंडिया

गठबंधन के साथ मायावती आती हैं तो हम इंडिया के साथ हैं। उज्वला का सिलेंडर मिला लेकिन होली दिवाली वाली फ्री गैस नहीं मिली। किसान सम्मान निधि मिलती है लेकिन हम भाजपा को वोट नहीं करते। पहले भाजपा के साथ थे, अब साथ छोड़ चुके हैं। आकाश आनंद को हम नहीं जानते, वो हमारा नेता नहीं है।

महिपाल ने रोजगार पर घेरा, युवाओं में भारी गुस्सा

हम बहुजन समाज से हैं। हम चाहते हैं ऐसी सरकार बने जो नौजवानों को रोजगार दे। नौजवान बेकार हो रहे हैं, बच्चे बड़ी पढ़ाई कर रहे हैं लेकिन नौकरी नहीं मिल रही। भाजपा ने सबका रोजगार छीन लिया है। हमें चंद्रशेखर और मायावती दोनों में से कोई भी चलेगा, सिर्फ नौजवानों को रोजगार मिले। हम भाजपा के पूरे खिलाफ हैं।

रजत ने कहा - मायावती राज में टाइट प्रशासन भाजपा में रिश्वतखोरी

हम रष्ट समाज से आते हैं, हमें मायावती का कार्यकाल पसंद है। उनके कार्यकाल में भ्रष्टाचार नहीं था, प्रशासन एकदम टाइट था। अब भ्रष्टाचार खुलकर होता है, भाजपा सरकार में बिना रिश्वत के कोई काम नहीं होता। अधिकारी बहुत रिश्वत लेते हैं, गरीबों को परेशान करते हैं। क्राइम बढ़ा है भाजपा सरकार में।

दारुल उलूम का इतिहास

स्थापना (1866-1867) ब्रिटिश शासनकाल और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद देश में मुसलमानों के धार्मिक व सांस्कृतिक पतन को रोकने के लिए। इसकी शुरुआत मौलाना मुहम्मद कासिम नानोत्वी, राशीद अहमद गंगोही और मुहम्मद आबिद हुसैन द्वारा की गई थी। दारुल उलूम देवबन्द की स्थापना का मुख्य उद्देश्य इस्लामिक शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करना, अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ वैचारिक प्रतिरोध तैयार करना और मुस्लिम समुदाय में धार्मिक मूल्यों को बचाए रखना था।

सोमदत्त की चेतावनी

बहन जी भाजपा के साथ गईं तो उन्हें भी वोट नहीं

हम बहुजन समाज से आते हैं, हमारी नेता बहन जी हैं, हाथी मेरा साथी है। जिंदगी भर से मायावती को वोट देते आए हैं। हम आकाश आनंद के चेहरे पर वोट नहीं देंगे, हम मायावती के चेहरे पर ही वोट देंगे। बहन जी की सरकार के बाद कोई लाभ नहीं मिला। बहन जी अगर भाजपा के साथ गईं तो हम बहन जी को भी वोट नहीं देंगे। हम भाजपा के साथ किसी भी कीमत पर नहीं हैं। चंद्रशेखर भी भाजपा का ही आदमी है, भाजपा वाले ही उसे मायावती का वोट काटने के लिए लड़वाते हैं। हमारा समाज चंद्रशेखर के साथ बहुत कम है।

श्याम कुमार ने फोड़ा बम- भाजपा में गुंडाराज और रेप की बाढ़

हम चाहते हैं बसपा की सरकार बने। बसपा का शासनकाल बहुत अच्छा रहा। भाजपा का शासनकाल बिल्कुल अच्छा नहीं है। भाजपा में गुंडागर्दी बहुत है, कोई क्राइम कंट्रोल नहीं है। पहले से ज्यादा क्राइम बढ़ गया है। लगभग रोज नाबालिग बच्चियों के साथ दुष्कर्म के मामले सामने आते हैं। बहुजन

तो छोड़ो हर वर्ग के साथ क्राइम हो रहा है, सभी परेशान हैं। बसपा में अधिकारियों पर नकेल थी, भ्रष्टाचार नहीं था, अब खुलकर भ्रष्टाचार हो रहा है, अधिकारी सुनता नहीं है। हम सिर्फ बहन जी के साथ हैं, वो अकेले लड़ेंगी तब भी उन्हीं के साथ हैं। बसपा को B टीम कहते हैं, लेकिन बसपा का वोट सिर्फ चंद्रशेखर काट रहा है। चंद्रशेखर भाजपा से मिला है, वो बसपा को खुला नुकसान पहुंचा रहा है, बहन जी का वोट काट रहा है।

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका

देवबंद के उलेमा (धार्मिक विद्वानों) ने ब्रिटिश उपनिवेशवाद का कड़ा विरोध किया। वर्ष 1919 में स्थापित जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में मिश्रित राष्ट्रवाद और हिंदू-मुस्लिम एकता के सिद्धांत का समर्थन किया था। आज देवबंद पूरी दुनिया में सुन्नी हनफी इस्लाम के प्रमुख पुनरुद्धारवादी और शैक्षणिक केंद्र देवबंदी आंदोलन के उद्गम स्थल के रूप में जाना जाता है।

मिताली को पटखनी दे स्मृति आगे निकलीं

» अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाली महिला क्रिकेटर बनीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। स्मृति मंधाना ने हांगकांग के खिलाफ ऐतिहासिक 124 रनों की पारी खेलकर मिताली राज के सर्वाधिक अंतरराष्ट्रीय रनों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया है। यह विश्लेषण दर्शाता है कि मंधाना की निरंतरता और आक्रामक बल्लेबाजी शैली उन्हें विश्व क्रिकेट की सबसे प्रभावी रन मशीन के रूप में स्थापित कर रही है।

महिला क्रिकेट के इस नए अध्याय में स्मृति मंधाना के नाम अब सर्वाधिक 18 अंतरराष्ट्रीय शतक दर्ज हो गए हैं। दुबई में भारत की सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने गुरुवार को महिला क्रिकेट की दुनिया में एक और बड़ा मुकाम हासिल कर इतिहास रच दिया। हांगकांग के खिलाफ महिला एशिया कप के मुकाबले में उतरते ही मंधाना ने अपनी शानदार बल्लेबाजी के साथ कई पुराने रिकॉर्ड पीछे छोड़ दिए। उन्होंने भारतीय क्रिकेट की दिग्गज मिताली राज को पीछे छोड़ते हुए महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के तीनों प्रारूपों में सबसे ज्यादा रन बनाने वाली बल्लेबाज का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। मंधाना ने यह उपलब्धि अपने 303वें अंतरराष्ट्रीय पारी में हासिल की।

मिताली राज के 10,868 रन के आंकड़े को पीछे छोड़ा

उन्होंने मिताली राज के 10,868 रन के आंकड़े को पीछे छोड़ा। इसके साथ ही वह महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाली बल्लेबाज बन गई हैं। न्यूजीलैंड की सूजी बेट्स 10,740 रन के साथ इस सूची में तीसरे स्थान पर हैं। इंग्लैंड की चार्लोट एडवर्ड्स 10,273 रन और वेस्टइंडीज की स्टेफनी टेलर 10,0007 रन के साथ अगले स्थानों पर हैं। गौरतलब है कि रिकॉर्ड बनाने के साथ मंधाना ने मुकाबले में बल्ले से भी शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने केवल 64 गेंदों में 124 रन की तूफानी पारी खेली। आखिरी ओवर में रन आउट होने से पहले उनकी पारी में चौकों और छक्कों की बारिश देखने को मिली। मंधाना की इस पारी के दम पर भारत ने निर्धारित ओवरों में पांच विकेट पर 193 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया।

करियर का 18वां शतक

यह पारी मंधाना के अंतरराष्ट्रीय करियर का 18वां शतक भी रहा। इसके साथ उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की पूर्व कप्तान मेग लैनिंग को पीछे छोड़ दिया, जिनके नाम अंतरराष्ट्रीय महिला क्रिकेट में 17 शतक थे। मंधाना अब इस सूची में अकेले शीर्ष पर हैं। दक्षिण अफ्रीका की लौरा वोल्वार्ड्ट भी 17 शतकों के साथ उनके करीब हैं, जबकि वेस्टइंडीज की हेली मैथ्यूज के नाम 15 शतक हैं। मंधाना ने अपनी इस पारी के दौरान एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की। उनके अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 50 या उससे अधिक रन बनाने वाली पारियों की संख्या 93 हो गई है। इस मामले में उन्होंने मिताली राज की बराबरी कर ली है। दोनों के नाम अब महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में संयुक्त रूप से सबसे ज्यादा 93 ऐसी पारियां हैं।

भाजपा हर किसी को बदनाम करने की कोशिश करती है : आदित्य ठाकरे

» दिशा सालियान मामले में सीबीआई जांच पर गरमाई राजनीति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। बॉम्बे हाई कोर्ट के दिशा सालियन की मौत के मामले में सीबीआई को एफआईआर दर्ज करने का निर्देश देने पर, शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे का बड़ा बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है और मैंने इस बारे में सोचा भी नहीं है।

मैं इस पर जवाब क्यों दूं? भाजपा हर किसी को बदनाम करने की कोशिश करती है। उन्होंने सालों तक राहुल गांधी को पप्पू बनाने की कोशिश की

है। उन्होंने पिछले छह सालों से मुझे बदनाम करने की कोशिश की है। जो कोई भी भाजपा को चुभता है, उन्हें उससे दिक्कत होती है। जैसा कि मैंने कहा, जब आपका किसी चीज़ से कोई लेना-देना न हो, तो उस पर क्यों बोलें या उसे कोई महत्व क्यों दें? यही मेरा स्टैंड है। बता दें बंबई हाईकोर्ट दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह की प्रबंधक रहीं दिशा सालियान की मौत के मामले में बुधवार को सीबीआई से जांच कराए जाने का आदेश दिया है।

उत्पीड़न के विरोध में 4पीएम के समर्थन में उमड़ा जनसैलाब

प्रेस क्लब ऑफ इंडिया ने दिल्ली पुलिस से जांच करवाने और दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही की मांग की

सोशल मीडिया के सभी प्लेटफार्म पर खुलकर समर्थन

दिल्ली पुलिस की कायरता की कहानी से पटे एक्स और फेसबुक के पेज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। 4 पीएम की पत्रकार शाहीन ख़ान और नफ़ीसा ख़ान पर हुई पुलिस बर्बरता के खिलाफ पूरे देश में जोरदार आवाज उठने लगी है। क्या आम आदमी क्या खास सब दिल्ली पुलिस की तीखी आलोचना कर रहे हैं। सोशल मीडिया के सारे प्लेटफार्म, मीडिया हाउस इन बहादुर महिला पत्रकारों के समर्थन में उतर आए हैं।

एक्स हो, फेसबुक हो, इंस्टाग्राम या कोई और सोर्स सब जगह भाजपा सरकार की आलोचना हो रही है। इन सबके बीच सियासी दलों ने भी पुलिस की कड़ी निंदा की है। कांग्रेस, आप, सपा, राजद, भीम आर्मी से लेकर सभी ने इसकी आलोचना करते हुए जांच की मांग की है। वही प्रेस क्लब ऑफ़ इंडिया ने दिल्ली पुलिस से जाँच करवाने और दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही की माँग की है।

महमूद प्राचा

"आज काफी देर हो गई। पुलिस के संदर्भ में घटनाएं बदलती चली गईं। दिल्ली में दो महिला पत्रकारों ने आरोप लगाया कि दिल्ली पुलिस ने उन्हें पीटा है, कोलकाता में तृणमूल कांग्रेस के दफ्तर में गुंडे घुस आए, सत्येंद्र जैन को ज़मानत देते हुए कोर्ट ने कहा कि कोई ठोस सबूत नहीं, आधार नहीं, फिर भी डाल दिया जेल में, नोएडा में आकृति चौधरी पर फर्जी तरीके से लगा दिया एनएसए। पुणे में सामाजिक कार्यकर्ता संतोष पंडित गिरफ़्तार। क्या देश पुलिस तंत्र बनता जा रहा है? मर्जी किसी को फंसा दो, किसी को पीट दो, गुंडे आ जाएं तो चुपचाप खड़े रहो।
-रवीश कुमार ऑफिसियल

"दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता से सवाल पूछना अपराध है क्या? 4 पीएम की महिला पत्रकारों के साथ जो हुआ, वो अक्षम्य अपराध है। उनको आई चोटें, उनकी चीखें, इस बात का गवाह हैं कि पुलिस की वर्दी ने मर्यादा तार तार कर दी। लखनऊ से लेकर दिल्ली तक वही दास्तां हर बार है! सवालों की आंच से डरती हुई सरकार है!
-अभिषेक उपाध्याय

मोदी जी के अमृतकाल में अब मुसलमान होना, महिला होना और निष्पक्ष पत्रकार होना, सबसे बड़ा गुनाह है : तेजस्वी यादव

ये मुसलमान है। ये महिला है। ये पत्रकार है। ये जेन-जी है। जुर्म इतना है कि देशभक्त महिला पत्रकार ने दिल्ली की मुख्यमंत्री और गृहमंत्री से सवाल पूछ लिया। फिर अमित शाह की दिल्ली पुलिस ने बेरहमी से इस बहन की पिटाई कर दी। मोदी जी के अमृतकाल वाले कथित न्यू इंडिया में अब मुसलमान होना, महिला होना और निष्पक्ष पत्रकार होना, सबसे बड़ा गुनाह है। भाजपा ने पूरे देश में सत्ताई निरंकुशता की हर सीमा को लाँघ दिया है। निरंकुश भाजपा सरकारों से अब सवाल पूछना उनकी आलोचना करना ही सबसे बड़ा अपराध है। दिल्ली हो या बिहार, हर जगह कायर भाजपाई अब पुलिस से पत्रकारों को पिटवा रहे हैं, डरा रहे हैं। भाजपा के शासनकाल में संवैधानिक संस्थाएं और पुलिस लोकतांत्रिक अधिकारों के दमन का प्रतीक बन गई है।

"घंटों के संघर्ष और लगातार प्रयासों के बाद आखिरकार शिकायत दर्ज कर ली गई।

राष्ट्रीय चेयरमैन, राज्यसभा सांसद इमरान प्रतापगढ़ी जी के निर्देशानुसार विभाग के साथी लगातार साकेत थाने में डटे रहे और बहन शाहीन को न्याय दिलाने के लिए आवाज़ बुलंद करते रहे। आखिरकार संघर्ष की जीत हुई और बहन शाहीन की शिकायत दर्ज की गई। यह जीत न्याय की लड़ाई की जीत है। – कांग्रेस अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ

पत्रकार की पहचान देखकर उसके साथ भेदभाव करना लोकतंत्र के खिलाफ : चंद्रशेखर

दिल्ली में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से सवाल पूछने की कोशिश करने पर पत्रकारों शाहीन और नफीसा को पुलिस द्वारा कथित रूप से मारते-पीटते थाने ले जाने, गाली-गलौज करने, धमकाने और उनके साथ दुर्व्यवहार किए जाने का आरोप यह बताता है कि वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में भारत 180 देशों में 157वें स्थान पर क्यों है। सबसे चिंताजनक यह है कि उनका कहना है कि उनके मुस्लिम होने की जानकारी मिलने के बाद उनके साथ दुर्व्यवहार और बढ़ गया यह भाजपा की मुस्लिम विरोधी मानसिकता और प्रेस की स्वतंत्रता पर गंभीर सवाल खड़े करता है। सवाल पूछना अपराध नहीं है। पत्रकार की पहचान देखकर उसके साथ भेदभाव करना लोकतंत्र और संविधान दोनों के खिलाफ है। यह बेहद गंभीर और चिंताजनक है! सवाल पूछना अपराध नहीं है। पत्रकार की पहचान देखकर उसके साथ भेदभाव करना लोकतंत्र और संविधान दोनों के खिलाफ है। यह बेहद गंभीर और चिंताजनक है!

दिल्ली पुलिस में बैठे कुछ अधिकारियों की कथित हरकतें संविधान विरोधी : इकरा हसन

दिल्ली पुलिस में बैठे कुछ अधिकारियों की कथित हरकतें संविधान और क़ानून के मूल्यों के बिल्कुल विपरीत हैं। 4पीएम की महिला पत्रकार के साथ मारपीट और नाम पूछकर कथित तौर पर धर्म के आधार पर उग्रता दिखाना बेहद शर्मनाक और चिंताजनक है। गृहमंत्री अमित शाह के अधीन दिल्ली पुलिस की ऐसी कार्यशैली लोकतंत्र और क़ानून के राज पर गंभीर सवाल खड़े करती है।

"जुल्मी जब जब जुल्म करेगा सत्ता के गलियारों से चप्पा चप्पा गूंज उठेगा इंक़लाब के नारों से। दिल्ली कांग्रेस अपलसंख्यक विभाग के सभी साथियों के जज़्बे को सलाम। –सैयद जीशान

पहले पुलिस का दावा फिर पोस्ट गायब

नई दिल्ली। घटना के कुछ ही देर बाद दिल्ली पुलिस की तरफ से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक सफाई सामने आई। पुलिस ने बताया कि 4पीएम की पत्रकार शाहीन और उनकी साथी ने अपनी स्कूटी वीवीआईपी रूट पर खड़ी कर दी थी और उसे हटाने से इनकार कर रही थीं।

शाहीन को थाने ले जाने की वजह बताने वाला दिल्ली पुलिस का एक्स पोस्ट डिलीट

पुलिस के मुताबिक इसी वजह से दोनों को थाने लाया गया। यानी पुलिस की पहली कहानी बिल्कुल साफ थी मामला रिपोर्टिंग का नहीं वीवीआईपी रूट पर खड़ी स्कूटी और पुलिस के निर्देश न मानने का था। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। मामला जैसे जैसे गरमाया पत्रकारों और सामाजिक संगठनों की तरफ से थाने के भीतर हुई कथित ज्यादती की जांच सीसीटीवी फुटेज सुरक्षित रखने और सामने लाने की मांग तेज हुई वैसे वैसे पुलिस की शुरुआती सफाई खुद सवालों के घेरे में आने लगी। और इसी बीच वह एक्स पोस्ट जिसमें पुलिस ने शाहीन और उनकी साथी को थाने लाने की वजह बताई थी डिलीट कर दिया गया।

अगर दिल्ली पुलिस का शुरुआती बयान पूरी तरह सही था अगर स्कूटी वीवीआईपी रूट पर खड़ी थी अगर पत्रकारों को पुलिस के निर्देश न मानने के कारण थाने लाया गया था तो फिर उस स्पष्टीकरण को सार्वजनिक मंच से हटाने की जरूरत क्यों पड़ी? क्या पुलिस ने अपनी सफाई बदल दी? क्या शुरुआती पोस्ट में कोई तथ्य ऐसा था जिसे बाद में पुलिस सही नहीं मान रही थी? या फिर पोस्ट हटाने का कोई दूसरा प्रशासनिक कारण था? इन सवालों का जवाब दिल्ली पुलिस को देना चाहिए। क्योंकि मामला अब सिर्फ एक डिलीटेड सोशल मीडिया पोस्ट का नहीं है। मामला उस पूरे घटनाक्रम का है जिसमें एक तरफ पत्रकार शाहीन पुलिस पर मारपीट और उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगा रही हैं दूसरी तरफ पुलिस इसे वीवीआईपी रूट और स्कूटी से जुड़ा मामला बता रही है।

"जब रक्षक ही भक्षक बन जाएं, तो न्याय की उम्मीद किससे की जाए? पत्रकार शाहीन की यह आपबीती रूह कंपा देने वाली है! दिल्ली पुलिस की अमानवीयता और तानाशाही का काला सच सामने आया है। पत्रकार शाहीन और उनकी बहन नफीसा पर थाने के भीतर कथित बर्बरता, मारपीट और उसके बाद रात के 3 बजे तक एफआईआर शो मोर। - सत्ता 360

"शाहीन और नफीसा के लगाए आरोपों की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। अगर धर्म के आधार पर दुर्व्यवहार हुआ है तो यह सिर्फ पत्रकारिता पर नहीं, संविधान की मूल भावना पर हमला है। - राजन गौतम

"पत्रकार का धर्म सवाल पूछना है, सत्ता का धर्म जवाब देना। धर्म, लिंग या पहचान के आधार पर पत्रकार को निशाना बनाना लोकतंत्र के लिए बेहद गंभीर संकेत है। अनुच्छेद 19(1)(a) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करता है। सत्ता से सवाल पूछना अपराध नहीं–लोकतंत्र की आत्मा है। - एक यूजर

"एडवोकेट महमूद प्राचा ने महिला पत्रकारों की पिटाई मामले में दिया बड़ा बयान अगर इस मामले में लिप्त पुलिस अधिकारियों और उनका साथ देने वाले सब लोगों को जेल नहीं कराई तो हमारी वकालत बेकार है। - तनवीर रंगरेज

"छोड़ना मत संजय भाई, दूसरे पत्रकार हो या ना हो जनता आपके साथ है। - अवि डांडिया

दिल्ली पुलिस का शर्मनाक कार्य। -सुनील राना

देश में अत्याचार असीमित बढ़ गया है। तानाशाही का अंत निश्चित है। - उमेश शर्मा

"जब पत्रकार को सवाल पूछने पर इतना बेरहमी से पीटा जा रहा है तो एक आम इंसान जब सवाल पूछेगा तो उसे क्या होगा आप समझ सकते हैं। - प्रिंस

"कुछ लोग अपना जुर्म खुलेआम कबूल कर रहे है और आजाद घूम रहे है। और जो सच्चाई के साथ काम कर रहे है उनके साथ मारपीट की जा रही है। - हिफ्जान

"पुलिस वाले खा जनता के पैसों से रहे है संविधान की शपथ ली है लेकिन दलाली और गुलामी संघ व भाजपा की कर रहे है। -गुरुघण्टाल

"कुछ लोग शाहीन खान को 'महिला' के रूप में, 'पत्रकार' के रूप में कम और मुस्लिमान के रूप में देख कर इस मामले को इग्नोर कर रहें होंगे। पर शाहीन खान के साथ ये घटना मुस्लिम होने के कारण नहीं स्वतंत्र, निष्पक्ष, साहसी, जिम्मेदार और निडर पत्रकार होने के कारण घटी है जो शर्मनाक। - हमजा

"महमूद साब सही कह रहे हैं। कल का ये कृत्य सरकार की पोल खोल रहा है।
- राजा शेख

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा